अर्थशास्त्र

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. "बजट रेखा की परिभाषा दीजिए। यह दाईं ओर कब खिसक सकती है?

अथवा

बजट रेखा क्या है? इसमें परिवर्तन कब होता है? (2020)

उत्तर- बजट रेखा एक सीधी रेखा है जो वस्तु-x या वस्तु-y की अधिकतम मात्रा (अथवा X तथा Y के सम्भव संयोगों) को प्रकट करती है, जिन्हें उपभोक्ता दी हुई आय तथा X एवं Y वस्तुओं की दी हुई कीमतों पर खरीद सकता है। इसे 'कीमत रेखा' भी कहा जाता है क्योंकि यह दोनों वस्तुओं के बीच कीमत अनुपात को प्रकट करती है अथवा उस दर को प्रकट करती है जिस पर एक वस्तु का दूसरी वस्तु से विनिमय होता ह जब बाजार में दोनों वस्तुओ की कीमतें दी हुई होती हैं।

बजट रेखा की स्थिति उपभोक्ता की आय तथा दो वस्तओं की कीमतों पर निर्भर करती है। यदि दोनों वस्तुओं 'मला म कोई परिवर्तन नहीं होता है. तो उपभोक्ता की आय बढ़ने पर. बजट रेखा दाईं ओर खिसक जाती है। इसी प्रकार, यदि उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन नहीं होता है, तो x तथा Y दोनों वस्तुओं की कीमतों में आनुपातिक कमी होने पर बजट रेखा दाईं ओर खिसक जाएगी। अतः यदि x तथा Y दोनों वस्तुओं की कीमतें घटकर आधी रह जाती हैं तो बजट रेखा दाईं ओर खिसक जाएंगी तथा इस स्थिति में बजट रेखा वस्तु-x तथा वस्तु-Y की पहले से दुगुनी सम्भव खरीद (Twice the Possible Purchase) का प्रकट करेगी।

प्रश्न 2. एक वस्तु की कीमत और उसकी माँग-मात्रा में विपरीत सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- वस्तु की माँगी गई मात्रा कीमत में वृद्धि से गिरती है और कीमत में कमी से बढ़ती है इसलिए एक वस्तु की मांगी गई मात्रा तथा कीमत के बीच विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। इसकी व्याख्या ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता के नियम के रूप में की जाती है। इस नियम के अनुसार, वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता घटती जाती है इसलिए प्रत्येक अतिरिक्त इकाई जो उपभोक्ता खरीदना चाहता है, उसके लिए वह कम-से-कम कीमत देने के लिए तैयार होगा।

प्रश्न 3. माँग के निर्धारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- किसी वस्तु की माँग के तीन निर्धारक इस प्रकार हैं---

1. वस्तु की कीमत (p_x)- जब वस्तु-x की कीमत बढ़ती है तब माँगी गई मात्रा घटती है एवं इसके विपरीत भी।

2. उपभोक्ता की आय-- उपभोक्ता की आय के बढ़ने से सामान्य वस्तु की माँग बढ़ती है एवं - इसके विपरीत भी।

3. सम्भावित कीमत-- वस्तु की सम्भावित कीमत के बढ़ने से उसकी वर्तमान माँग में वृद्धि होती है एवं इसके विपरीत भी।

प्रश्न 4. 'वस्तु की माँग में वृद्धि' और 'माँग-मात्रा में वृद्धि' में भेद कीजिए।

उत्तर- वस्तु की माँग में वृद्धि और माँग-मात्रा में वृद्धि में अन्तर

क्र.सं.	माँग में वृद्धि	माँग-मात्रा में वृद्धि
1.	माँग में वृद्धि से अभिप्राय वर्तमान कीमत पर वस्तु की खरीद में होने वाली वृद्धि से है।	माँग-मात्रा में वृद्धि से अभिप्राय वस्तु की कीमत में कमी होने के फलस्वरूप उसकी खरीद में होने वाली वृद्धि से है।
2.	माँग में वृद्धि वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों/कारकों में परिवर्तन के कारण होती है।	माँग-मात्रा में वृद्धि वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण होती है।
3.	रेखाचित्रीय दृष्टि से, इसे माँग वक्र के आगे की ओर खिसकाव द्वारा प्रकट किया जाता है।	रेखाचित्रीय दृष्टि से, इसे उसी माँग वक्र पर नीचे की ओर संचलन द्वारा प्रकट किया जाता है।

प्रश्न 5. एक अनुसूची की सहायता से एक व्यक्ति की माँग और बाजार माँग के बीच भेद कीजिए।

उत्तर- व्यक्तिगत माँग बाजार में विभिन्न कीमतों पर एक व्यक्तिगत क्रेता द्वारा वस्तु के लिए की गई माँग को प्रकट करती है जबकि बाजार माँग बाजार में विभिन्न कीमतों पर सभी क्रेताओं द्वारा एक वस्तु के लिए की गई माँग को प्रकट करती है। बाजार माँग व्यक्तिगत माँग का समस्त जोड़ है जैसा कि दी गई सारणी में दिखाया गया है

बाजार माँग अनुसूची

आइसक्रीम की कीमत (₹)	A की माँग (1)	B की माँग (2)	बाजार माँग (3) (1 + 2)	
1	4	5	4 + 5 = 9	मान्यता : बाजार में वस्तु के केवल 2 क्रेता हैं।
2	3	4	3 + 4 = 7	
3	2	3	2 + 3 = 5	
4	1	2	1 + 2 = 3	

उपर्युक्त सारणी विभिन्न कीमतों पर A तथा B व्यक्तियों की माँग तथा बाजार माँग को व्यक्त करती है। कॉलम 3 बाजार माँग को व्यक्त करता है जो कॉलम 1 तथा 2 की व्यक्तिगत माँग का समस्तर जोड़ है।

प्रश्न 6. माँग वक्र दाहिनी ओर ढलवाँ क्यों होता है?

उत्तर- सामान्य वस्तुओं का माँग वक्र निम्न कारणों से बाईं ओर से दाहिनी ओर नीचे की तरफ ढलवाँ होता है---

1. घटती सीमान्त उपयोगिता का नियम--- इस नियम के अनुसार किसी वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त उपयोगिता घटती जाती है। वस्तु की अधिक खरीदी गई मात्रा के अनुरूप घटते MU_x का अर्थ है-घटता P_x क्योंकि $P_x = MU_x$

2. आय प्रभाव--- वस्तु की कीमत कम होने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय बढ़ जाती है, इसके अनुसार, वस्तु की माँगी गई मात्रा में वृद्धि होती है।

3. प्रतिस्थापन प्रभाव- जब किसी वस्तु की कीमत, प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत की तुलना में कम हो जाती है, तब उसकी माँगी गई मात्रा बढ़ जाती है।

4. उपभोक्ता समूह का आकार- जब वस्तु की कीमत कम होती है तो कई उपभोक्ता जो पहले उसे पुरानी कीमत पर खरीद नहीं रहे थे, अब उसकी माँग करने लगते हैं।

प्रश्न 7. माँग में वृद्धि के कारण बताइए। इनमें से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- वस्तु की माँग में वृद्धि या माँग वक्र के दाईं ओर खिसकने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं--

1. जब उपभोक्ता की आय में वृद्धि होती है।

2. जब प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तथा जब पूरक वस्तु की कीमत में कमी होती है।

3. जब फैशन या जलवायु में परिवर्तन के कारण वस्तु के लिए उपभोक्ता की रुचि में परिवर्तन आता है।

4. जव निकट भविष्य में कीमत बढ़ने की सम्भावना हो।

5. जब क्रेताओं की संख्या में वृद्धि होती है।

6. जब निकट भविष्य में उपभोक्ता की आय बढ़ने की सम्भावना हो।

उपभोक्ता की आय--- उपभोक्ता की आय में वृद्धि से, सामान्य वस्तुओं के लिए माँग वक्र दाईं ओर खिसक जाता है परन्तु उपभोक्ता की आय के कम होने से घटिया वस्तुओं के लिए माँग वक्र दाईं ओर खिसक जाता है। सम्बन्धित **वस्तुओं की कीमत----** प्रतिस्थापन वस्तुओं की स्थिति में, वस्तु की माँग में वृद्धि होती है जब उसकी प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है। पूरक वस्तुओं की स्थिति में, वस्तु की माँग में वृद्धि होती है जब उसकी पूरक वस्तु की कीमत घटती है।

प्रश्न 8. वस्तु की माँग को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- किसी वस्तु की बाजार माँग को अग्रलिखित कारक प्रभावित करते हैं--

1. वस्तु की कीमत- जब बाजार में किसी वस्तु की कीमत बढ़ती है उसकी माँगी गई मात्रा घटती है, एवं इसके विपरीत भी।

2. उपभोगता की आय--- सामान्य वस्तुओं की बाजार माँग तथा उपभोक्ता की आय में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। उपभोक्ता की आय के बढ़ने से वस्तु की बाजार माँग बढ़ती है।

3. सम्बन्धित वस्तओं की कीमतें--- प्रतिस्थापक वस्तओं की स्थिति में, वस्तु की बाजार माँग घटती है जब प्रतिस्थापक वस्तु की कीमत घटती है। परक वस्तुओं की स्थिति में, वस्तु की बाजार माँग बढ़ती है, जब पूरक वस्तु की कीमत घटती है।

4. रुचि और प्राथमिकताएँ--- यदि उपभोक्ता की रुचि और प्राथमिकताओं में परिवर्तन होता है तो वस्तु की गई मात्रा में भी परिवर्तन होता है।

5. आय का वितरण-यदि आय का वितरण समान होता है तो वस्तु की बाजार माँग बढ़ती है।

6. जनसंख्या का आकार--- जनसंख्या के अधिक होने पर वस्तु की बाजार माँग बढ़ती है एवं इसके विपरीत भी।

प्रश्न 9. माँग वक्र के दाईं ओर खिसकने एवं बाईं ओर खिसकने के कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर- माँग वक्र के दाईं ओर खिसकने के तीन कारण---

1. उपभोक्ता की आय में वृद्धि होना।

2. उपभोक्ता की वस्तु के लिए अधिक रुचि और प्राथमिकता होना।

3. प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में वृद्धि होना।

माँग वक्र के बाईं ओर खिसकने के तीन कारण---

1. उपभोक्ता की आय में कमी होना।

2. उपभोक्ता की वस्तु के प्रति कोई रुचि और प्राथमिकता न रहना।

3. प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में कमी होना।

प्रश्न 10. माँग की कीमत लोच के आकार (मान) को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- माँग की लोच निम्नलिखित कारकों से प्रभावित होती है--

1. वस्तु की प्रकृति--- वस्तुएँ अनिवार्यताएँ, आरामदायक तथा विलासिताएँ हो सकती हैं। अनिवार्यताओं (जैसे-नमक) की माँग अधिक बेलोचदार होती है, आरामदायक वस्तुओं (जैसे-कूलर) की माँग साधारणतया लोचदार होती है किन्तु विलासिताओं (जैसे-ACs) की माँग बहुत अधिक लोचदार होती है।

2. स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धि--- जिन वस्तुओं के स्थानापन्न उपलब्ध होते हैं; जैसे-चाय और कॉफी तो उनकी माँग लोचदार होती है। जिन वस्तुओं के कोई स्थानापन्न नहीं होते; जैसे-शराब और सिगरेट, उनकी माँग बेलोचदार होती है।

3. वस्तु के वैकल्पिक उपयोग--- यदि किसी वस्तु के कई उपयोग होते हैं तो उसकी माँग लोचदार होती है। उदाहरणार्थ-बिजली, कोयला।

4. कीमत स्तर--- जिन वस्तुओं की कीमत बहुत ऊँची होती है उनकी माँग अधिक लोचदार होती है।

5. समय अवधि--- अल्पकाल की तुलना में दीर्घकाल में माँग अधिक लोचदार होती है क्योंकि अल्पकाल में उपभोग की आदतें स्थिर रहती हैं।

प्रश्न 11. एक वस्तु की मांग पर विचार करें। ₹4 कीमत पर एक वस्त की इकाइयों की माँग है। मान लीजिए कि वस्तु की कीमत बढ़कर ₹ 5 हो जाती है तथा फलस्वरूप वस्त की माँग घटकर 20 इकाइयाँ हो जाती है। कीमत लोच की गणना कीजिए। (NCERT)

उतर–

$$E_d = (-)\frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$$

$P = ₹\,4;\ P_1 = ₹\,5;\ \Delta P = P_1 - P = ₹\,5 - ₹\,4 = ₹\,1$

$Q = 25$ इकाइयाँ; $Q_1 = 20$ इकाइयाँ;

$\Delta Q = Q_1 - Q = (20 - 25)$ इकाइयाँ $= (-)\ 5$ इकाइयाँ

$$E_d = (-)\frac{4}{25} \times \frac{-5}{1} = 0.8$$

कीमत लोच = 0.8.

प्रश्न 12. एक ऐसे बाजार को लीजिए, जहाँ केवल दो उपभोक्ता हैं तथा मान लीजिए वस्तु के लिए उनकी माँग इस प्रकार हैं

p	d_1	d_2
1	9	24
2	8	20
3	7	18
4	6	16
5	5	14
6	4	12

वस्तु के लिए बाजार माँग की गणना कीजिए।

हल— वस्तु की बाजार माँग व्यक्तिगत माँग अनुसूचियों d_1 तथा d_2 का जोड़ है।

कीमत (p)	d_1	d_2	बाजार माँग अनुसूची ($= d_1 + d_2$)
1	9	24	9 + 24 = 33
2	8	20	8 + 20 = 28
3	7	18	7 + 18 = 25
4	6	16	6 + 16 = 22
5	5	14	5 + 14 = 19
6	4	12	4 + 12 = 16

प्रश्न 13. मान लीजिए कि किसी वस्तु की माँग की कीमत लोच-0.2 है। यदि वस्तु की कीमत में 5 प्रतिशत की वृद्धि होती है तो वस्तु के लिए माँग में कितनी प्रतिशत कमी आएगी? (NCERT)

उतर–

$$E_d = \frac{\text{माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

माँग की कीमत लोच = – 0.2

कीमत में प्रतिशत परिवर्तन = 5%

$$-0.2 = \frac{\text{माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{5}$$

⇒ माँगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन = (–) 1%

अत: वस्तु की माँग 1 प्रतिशत गिर जाएगी।

प्रश्न 14. माँग वक्र D(p) = 10 - 3p को लीजिए। कीमत $\frac{5}{3}$ पर लोच क्या है?

उतर– दिया है, माँग वक्र D(p) = 10-3p

$$\text{कीमत} = \frac{5}{3}$$

$$D = 10 - 3 \times \frac{5}{3} = 10 - 5 = 5$$

$$\Rightarrow \quad D = 5$$

$$D(p) = 10 - 3p$$

$$\frac{\Delta D}{\Delta p} = -3 \quad \text{या} \quad \frac{\Delta q}{\Delta p} = -3$$

$$\text{माँग की कीमत लोच } (E_d) = (-)\frac{p}{q} \times \frac{\Delta q}{\Delta p}$$

$$= (-)\frac{5}{3} \times \frac{1}{5} \times -3$$

$$\Rightarrow \quad E_d = 1$$

प्रश्न 15. सामान्य वस्तुओं तथा निकृष्ट वस्तुओं के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। (2020)

उतर-- सामान्य तथा निकृष्ट वस्तुओं में अन्तर

क्र.सं.	सामान्य वस्तुएँ	निकृष्ट वस्तुएँ
1	सामान्य वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनमें आय	निकृष्ट (निम्नकोटि) वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जिनमें

	तथा माँगी गई मात्रा के बीच धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। अन्य बातें समान रहने पर, उपभोक्ता की आय बढ़ने पर माँगी गई मात्रा में वृद्धि होती है एवं इसके विपरीत भी।	आय तथा माँगी गई मात्रा के बीच विपरीत (या ऋणात्मक) सम्बन्ध पाया जाता है। अन्य बातें समान रहने पर, उपभोक्ता की आय बढ़ने पर माँगी गई मात्रा कम हो जाती हैं एवं इसके विपरीत भी।
2.	आय प्रभाव धनात्मक होता है।	आय प्रभाव ऋणात्मक होता है।
3.	सामान्य वस्तुएँ आवश्यकता की वस्तुएँ हो भी सकती हैं, और नहीं भी।	निम्नकोटि वस्तुएँ सदैव ही आवश्यकता की वस्तुएँ होती हैं। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता निम्नकोटि वस्तुएँ खरीदते हैं क्योंकि ये जीवन के लिए आवश्यक होती हैं (जैसे-मोटा अनाज तथा मोटा कपड़ा)
4.	सामान्य वस्तुओं की स्थिति में, वस्तु की अपनी कीमत तथा उसकी माँगी गई मात्रा के बीच सदैव ही विपरीत सम्बन्ध होता है (जिसे माँग का नियम कहा जाता है)।	निम्नकोटि वस्तुओं की स्थिति में, वस्तु की अपनी कीमत तथा इसकी माँगी गई मात्रा के बीच विपरीत सम्बन्ध हो भी सकता है और नहीं भी (माँग का नियम विफल हो सकता है)।

प्रश्न 16 एक पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार की क्या विशेषताएँ हैं? (NCERT)

उत्तर- एक पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं--

1. किसी वस्तु के क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि कोई भी व्यक्तिगत

क्रेता या विक्रेता कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता है। तद्नुसार, पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत एक फर्म केवल कीमत स्वीकारक होती है, कीमत निर्धारक नहीं।

2. सभी विक्रेता एक वस्तु की समरूप इकाइयाँ बेचते हैं। तद्नुसार, कीमत पर आंशिक नियन्त्रण भी सम्भव नहीं होता है। बाजार में एकसमान कीमत ही पाई जाती है। फर्म के माँग वक्र (औसत सम्प्राप्ति वक्र या कीमत रेखा) को X-अक्ष के समानान्तर एक क्षैतिज सरल रेखा के द्वारा दर्शाया जाता है।

3. क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार में प्रचलित कीमत के बारे में पूर्ण जानकारी होती है।

4. एक फर्म उद्योग में प्रवेश व उसे किसी भी समय छोड़कर जा सकती है। फलस्वरूप दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ ही प्रचलित होते हैं।

प्रश्न 17. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की 'फर्मों के प्रवेश और निकास की स्वतन्त्रता' की विशेषता का परिणाम समझाइए।

उत्तर- पूर्ण प्रतिस्पर्धा की 'फर्मों के प्रवेश और निकास की स्वतन्त्रता' की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत्---

1. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में, एक फर्म उद्योग में दीर्घकाल में प्रवेश कर सकती अथवा इसे छोड़कर जा सकती है। परिभाषा से ही अल्पकाल इतनी छोटी अवधि है कि जिसमें नई फर्मे उद्योग में प्रवेश कर सकें तथा वर्तमान फर्मे उद्योग को छोड़ सकें।

2. स्वतन्त्र रूप से प्रवेश एवं छोड़ने के कारण फर्मे दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ (TR = TC या AR = AC) ही प्राप्त करती हैं। यदि अत्यधिक या असामान्य लाभ प्राप्त होते हैं, तब नई फर्म उद्योग में प्रवेश करेंगी। बाजार पूर्ति में वृद्धि होगी। बाजार कीमत गिरेंगी। अतिरिक्त लाभ समाप्त हो जाएँगे। असामान्य हानि की स्थिति में, कुछ वर्तमान फर्मे उद्योग को छोड़ देंगी। बाजार पूर्ति कम हो जाएगी। बाजार कीमत में वृद्धि होगी। असामान्य हानि समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न-- 18. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की 'बड़ी संख्या में क्रेता और विक्रेता विशेषता को समझाइए।

उत्तर- पर्ण प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत किसी वस्तु के क्रेताओं तथा विक्रेताओं की संख्या बहत अधिक होता है। किसी विशेष वस्तु को बेचने वाले विक्रेताओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि एक व्यक्तिगत फर्म बाजार पूर्ति में केवल कुछ ही भाग का योगदान देती है। अत: एक व्यक्तिगत फर्म द्वारा पूर्ति में की जाने वाली वद्धि या कमी का कुल बाजार पूर्ति पर बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है और इस प्रकार एक व्यक्तिगत फम वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती है। .

पूर्ण प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत न केवल विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है अपितु क्रेताओं की संख्या भी बहुत अधिक होती है। तद्नुसार, एक व्यक्तिगत फर्म की भाँति, एक व्यक्तिगत क्रेता भी वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ ही प्रचलित होते हैं।

प्रश्न 19. एक कीमत स्वीकारक फर्म का कुल सम्प्राप्ति वक्र ऊपर की ओर प्रवणता वाली सीधी रेखा क्यों होती है? यह वक्र उद्गम से होकर क्यों गुजरती है? (NCERT)

उत्तर- प्रतिस्पर्धी फर्म अपने उत्पादन को एक समान कीमत पर बेचती है। कीमत या औसत सम्प्राप्ति स्थिर होती है तथा सीमान्त सम्प्राप्ति भी स्थिर होता है अर्थात् औसत सम्प्राप्ति के बराबर होता है। कुल सम्प्राप्ति उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर सीमान्त सम्प्राप्तियों का जोड़ होता है। MR स्थिर होने

के कारण TR स्थिर दर पर बढ़ता है। अत: TR एक सीधी रेखा होती है। यह उद्‌गम (अक्ष केन्द्र) से इस कारण गुजरती है क्योंकि जब उत्पादन शून्य होता है तब TR भी शून्य होता है।

प्रश्न 20. बेचे जाने वाली मात्रा में परिवर्तन से, कुल सम्प्राप्ति किस प्रकार परिवर्तित होती है? समझाइए।

उत्तर- बेचे जाने वाली मात्रा में परिवर्तन से, सम्प्राप्ति | कुल सम्प्राप्ति किस प्रकार परिवर्तित होती है, इसे

कुल सम्प्राप्ति कुल सम्प्राप्ति वक्र द्‌वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। कुल सम्प्राप्ति वक्र अंकित करने में बेची गई मात्रा अथवा निर्गत को X-अक्ष पर और प्राप्त सम्प्राप्ति को Y-अक्ष पर दिखाते हैं। दिया गया रेखाचित्र एक फर्म का कुल सम्प्राप्ति वक्र दर्शाता है। यहाँ पर तीन प्रेक्षण प्रासंगिक हैं- पहला, जब निर्गत शून्य हो, फर्म की कुल सम्प्राप्ति भी शून्य होती है। अत: कुल सम्प्राप्ति निर्गत वक्र बिन्दु o से गुजरती है। दूसरा, जैसे-जैसे निर्गत कुल सम्प्राप्ति वक्र–एक फर्म का कुल सम्प्राप्ति वक्र फर्म बढ़ता है. कल सम्प्राप्ति में वृद्‌धि होती है। वैसे भी द्‌वारा अर्जित कुल सम्प्राप्ति तथा फर्म के निर्गत स्तर के बीच समीकरण “कुल सम्प्राप्ति = pxq" एक सीधी ।

सम्बन्ध दर्शाती है। वक्र की प्रवणता Aq/0q, बाजार कीमत रेखा दर्शाती है, क्योंकि p स्थिर है। इससे अभिप्राय है कि कुल सम्प्राप्ति वक्र एक ऊपर की ओर जाती हुई सीधी रेखा है। तीसरा, इस सीधी रेखा की प्रवणता जब निर्गत एक इकाई है (दिए गए रेखाचित्र में समस्तरीय दूरी Oq), कुल सम्प्राप्ति (दिए गए रेखाचित्र में ऊर्ध्वस्तरीय ऊँचाई Aq) px 1 = p है। अतः सीधी रेखा की प्रवणता Aq/0q] = p है।

प्रश्न 21. लाभ-अधिकतमीकरण को परिभाषित कीजिए। इसके होने की आवश्यक शर्ते भी बताइए।

उत्तर- एक फर्म वस्तु की विशेष मात्रा का उत्पादन तथा विक्रय करती है। फर्म का लाभ जिसे π द्‌वारा दर्शाया जाता है, इसकी कुल सम्प्राप्ति तथा इसका कुल उत्पादन लागत के बीच अन्तर के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में,

π = कुल सम्प्राप्ति - कुल लागत

स्पष्ट रूप से कुल सम्प्राप्ति तथा कुल लागत के मध्य में अन्तर फर्म द्‌वारा अर्जित की गई निवल लागत है। एक फर्म अधिकतम लाभ कमाना चाहती है। फर्म मात्रा q_0 को, जिस पर उसके लाभ अधिकतम होते हैं, ज्ञात करना चाहेगी। परिभाषानुसार q_0 के अतिरिक्त किसी अन्य मात्रा पर, फर्म के लाभ q_0 की अपेक्षा कम है। लाभ अधिकतम होने के लिए q_0 पर तीन शर्ते पूर्ण होनी चाहिए

1. कीमत P, सीमान्त लागत के बराबर हो।

2. q_0 पर सीमान्त लागत ह्रासमान नहीं हो।

3. फर्म को उत्पादन करते रहने के लिए अल्पकाल में, कीमत, औसत परिवर्तनीय लागत से अधिक हो (p > AVC) दीर्घकाल में कीमत औसत लागत से अधिक हो (p > AC)।

प्रश्न 22. पूर्ण प्रतिस्पर्धा क्या है? पूर्ण प्रतिस्पर्धा में कीमत का निर्धारण कैसे होता है? (2020).

उत्तर-- पूर्ण प्रतिस्पर्धा

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न में प्रश्न 1 का उत्तर देखें।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा में कीमत व उत्पादन का निर्धारण

पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म की अपनी कोई कीमत-नीति नहीं होती। वह केवल उत्पादन का समायोजन करने वाली होती है। अतः पूर्ण प्रतिस्पर्धा की दशा में फर्म 'कीमत ग्रहण करने वाली' (Price taker) होती है, कीमत-निर्धारण करने वाली (Price maker) नहीं। उद्योग द्वारा माँग व पूर्ति के आधार पर कीमत निर्धारित होती है और उस कीमत को उद्योग के अन्तर्गत कार्य करने वाली सभी फर्मे दिया हुआ मान लेती हैं। बाजार में असंख्य फर्म होने के कारण कोई भी व्यक्तिगत फर्म अपनी क्रियाओं द्वारा निर्धारित कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती। बाजार में वस्तु की माँग और पूर्ति द्वारा निर्धारित कीमत को फर्म द्वारा स्वीकार किया जाता है और फर्म उस कीमत के आधार पर अपने उत्पादन का समायोजन करती है। पूर्ण प्रतिस्पर्धा की दशा में फर्म की माँग वक्र एक समानान्तर सीधी रेखा होती है। यह निर्धारित मूल्य फर्म की औसत आय व सीमान्त आय होती है तथा एक ही रेखा द्वारा प्रदर्शित की जाती है। दिए गए चित्र में उद्योगों द्वारा कीमत का निर्धारण दिखाया गया है तथा फर्म उस कीमत को ग्रहण कर रही है। उद्योग की माँग और पूर्ति का साम्य बिन्दु E तथा कीमत OP है। इसी OP कीमत को फर्म ग्रहण कर लेती है। उद्योग की माँग में वृद्धि हो जाने पर साम्य बिन्दु E^1 तथा कीमत बढ़कर OP^1 हो जाती है, जिसे फर्म को स्वीकार करना पड़ता है तथा फर्म भी OP^1 कीमत ग्रहण कर लेती है। अब फर्म की औसत आय तथा सीमान्त आय रेखा P^1 AM^1 हो जाती है। इसी प्रकार माँग में कमी होने पर नया माँग वक्र D^2D^2 और कीमत घटकर OP^2 हो जाती है। यही कीमत फर्म भी ग्रहण कर लेती है तथा फर्म की औसत व सीमान्त आय रेखा P^2AM^2 हो जाती है।

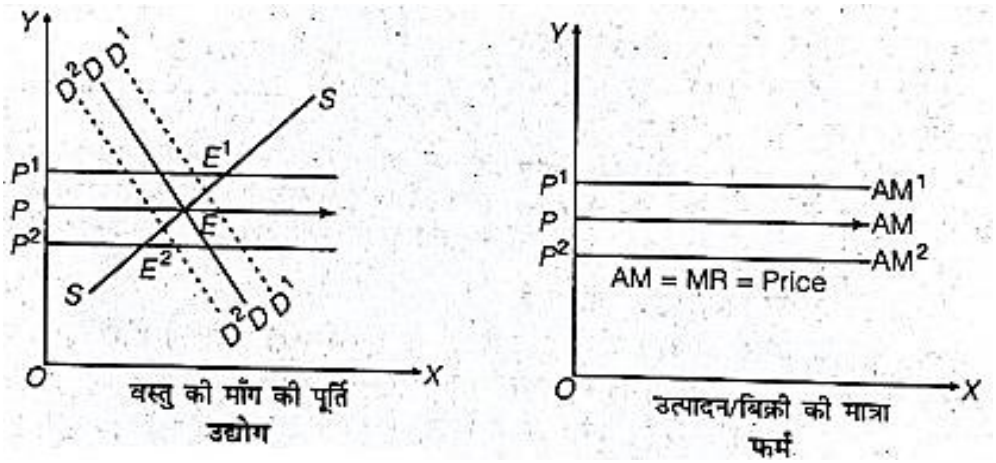

स्पष्ट है कि पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में कोई फर्म उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत के आधार पर अपनी उत्पादन व बिक्री का कार्य करती है। फर्म अधिकतम लाभ अर्जित करने का प्रयत्न करती है। कोई फर्म केवल सन्तुलन की स्थिति में अधिकतम लाभ प्राप्त करती है। किसी फर्म को सन्तुलन की स्थिति में तब ही कहा जाता है जब उसमें विस्तार अथवा संकुचन करने की कोई प्रवृत्ति न हो। इस स्थिति में ही फर्म अधिकतम लाभ प्राप्त करती है। यदि औसत लागत में सामान्य लाभ सम्मिलित हो तो कीमत के औसत लागत के बराबर होने की दशा में फर्म सामान्य लाभ प्राप्त करेगी। पूर्ण प्रतिस्पर्धा में एकमात्र स्थिति, जिसमें फर्म सन्तुलन में हो और सामान्य लाभ प्राप्त कर रही हो, वह है जब औसत लागत वक्र, सीमान्त आगम वक्र पर स्पर्श रेखा हो। इस स्थिति में ही औसत आय कीमत के बराबर 'होती है और फर्म अपनी सब लागतों को पूरा कर लेती है तथा केवल सामान्य लाभ प्राप्त करती है।

प्रश्न 23. सामान्य लाभ तथा लाभ-अलाभ बिन्दु को समझाइए।

उत्तर- लाभ के न्यूनतम स्तर को जो एक फर्म को इसके वर्तमान व्यापार में बनाए रखने के लिए आवश्यक है, सामान्य लाभ कहकर परिभाषित करते हैं। एक फर्म जो सामान्य लाभ अर्जित नहीं करती, व्यापार में नहीं रह सकती। सामान्य लाभ, फर्म की कुल लागतों का एक भाग होता है। इन्हें उद्यमशीलता की 'अवसर लागत के रूप में समझना भी लाभदायक है। वह लाभ जो एक फर्म सामान्य लाभ से ऊपर अर्जित करती है. अधिसामान्य लाभ कहलाता है दीर्घकालीन स्थिति में यदि फर्म सामान्य लाभ से कुछ भी कम अर्जित करती है, तो वह उत्पादन नहीं करती है। किन्तु अल्पकाल में फर्म का लाभ यदि इस स्तर से कम है, . तो भी उत्पादन कर सकती है। पूर्ति वक्र के जिस बिन्दु पर एक फर्म केवल साधारण लाभ अर्जित करती है, वह फर्म का लाभ-अलाभ बिन्दु कहलाता है। अतः न्यूनतम औसत लागत का वह बिन्दु जिस पर पूर्ति वक्र दीर्घकालीन औसत वक्र (अल्पकाल में अल्पकालीन औसत लागत वक्र) को काटता है, फर्म का लाभ-अलाभ बिन्दु है।

प्रश्न 24. निम्न तालिका में एक प्रतिस्पर्धी फर्म की कुल लागत सारणी को दर्शाया गया है। वस्तु की कीमत ₹10 दी हुई है। प्रत्येक उत्पादन स्तर पर लाभ की गणना कीजिए। लाभ-अधिकतमीकरण निर्गत स्तर ज्ञात कीजिए।

INCERT)

कीमत (इकाई)(रु)	कुल लागत (इकाई) ₹
0	5
1	15
2	22
3	27
4	31
5	38
6	49
7	63
8	81
9	101
10	123

उत्तर–

हल—

बेची गई मात्रा	TC (₹)	कीमत (₹)	(TR) (₹)	लाभ $(= TR - TC)$ (₹)
0	5	10	0	−5
1	15	10	10	−5
2	22	10	20	−2
3	27	10	30	3
4	31	10	40	9
5	38	10	50	12
6	49	10	60	11
7	63	10	70	7
8	81	10	80	−1
9	101	10	90	−11
10	123	10	100	−23

प्रश्न 25. एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ क्या हैं?

उत्तर- एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ निम्न प्रकार हैं--

1. क्या उत्पादन किया जाए? विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन से सम्बन्धित चयन की समस्या।

2. कैसे उत्पादन किया जाए? उत्पादन की तकनीक से सम्बन्धित चयन की समस्या।

3. किसके लिए उत्पादन किया जाए? उत्पादन के वितरण से सम्बन्धित चयन की समस्या। ये समस्याएँ प्रत्येक अर्थव्यवस्था को केन्द्रीय समस्याएँ हैं। ये इस कारण उत्पन्न होती हैं क्योंकि (1) असीमित आवश्यकताओं की तुलना में संसाधन दुर्लभ होते हैं और (2) इन संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग होते हैं।

प्रश्न 126 अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु की विवेचना कीजिए।

उत्तर- परम्परागत रूप से अर्थशास्त्र की विषय-वस्त का अध्ययन दो व्यापक शाखाओं के अन्तर्गत किया जाता रहा है-व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र। व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत हम बाजार में उपलब्ध विभिन्न " वस्तुओं तथा सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न आर्थिक अभिकर्ताओं के व्यवहार का एक यह जानने का प्रयास करते हैं कि इन बाजारों में व्यक्तियों की अन्त:क्रिया द्वारा वस्तुओं तथा मात्राए और कीमतें किस प्रकार निर्धारित होती हैं। इसके विपरीत समष्टि अर्थशास्त्र में हम कुल " पार तथा समग्र कीमत स्तर आदि समग्र उपायों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हए परी. पव्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि समग्र उपायों के स्तर किस प्रकार चारत हात है तथा उनमें समय के साथ परिवर्तन किस प्रकार आता है। समष्टि अर्थशास्त्र में अध्ययन के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न इस प्रकार हैं-अर्थव्यवस्था में कल निर्गत का स्तर क्या है? कल निर्गत निर्धारण किस.. प्रकार किया जाता है? कुल निर्गत में समय के साथ किस प्रकार वृद्धि होती रहती है? क्या अर्थव्यवस्था के संसाधनों (उदाहरण के लिए श्रम) का पर्ण रूप से उपयोग किया जा रहा है? संसाधनों का पूर्ण रूप से उपयाग न होने के क्या कारण हैं? कीमतों में वृद्धि क्यों होती है? अत: जिस प्रकार व्यष्टि अर्थशास्त्र में विभिन्न बाजारों का अध्ययन किया जाता है, वैसा समष्टि अर्थशास्त्र में नहीं। समष्टि अर्थशास्त्र में हम अर्थव्यवस्था के कार्य-निष्पादन की समग्र अथवा समष्टिगत उपायों के व्यवहार का अध्ययन करने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 127. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए। (NCERT; 2020)

उत्तर- व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक सम्बन्धों अथवा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है; जैसे–एक व्यक्तिगत फर्म, एक व्यक्तिगत परिवार अथवा एक व्यक्तिगत उपभोक्ता। इसके विपरीत, समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक सम्बन्धों अथवा आर्थिक समस्याओं अथवा आर्थिक मुद्दों का अध्ययन किया जाता है।

2. व्यष्टि अर्थशास्त्र एक व्यक्तिगत फर्म अथवा उद्योग में उत्पादन तथा कीमत के निर्धारण से - सम्बन्धित है, जबकि समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण से सम्बन्धित है।

3. व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की यह धारणा है कि समष्टि प्राचल (जैसे-कुल उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर) स्थिर रहते हैं। दूसरी ओर, समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की यह धारणा है कि व्यष्टि प्राचल (जैसे–आय तथा सम्पत्ति का वितरण) स्थिर रहते हैं।

4. एक व्यक्तिगत परिवार के बचत तथा उपभोग प्रतिमान, एक फर्म या उद्योग का कीमत स्तर व्यष्टि अर्थशास्त्र के उदाहरण हैं। कुल उत्पादन, समग्र माग तथा सामान्य कीमत स्तर समष्टि अर्थशास्त्र के उदाहरण हैं।

प्रश्न 128. एक आगत के सीमान्त उत्पाद तथा कुल उत्पाद के बीच सम्बन्ध समझाइए। (NCERT)

उत्तर- एक आगत के सीमान्त उत्पाद तथा कुल उत्पाद के बीच सम्बन्ध निम्नवत हैं---

1. जब सीमान्त उत्पाद बढ़ता है तो कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है।

2. जब सीमान्त उत्पाद घटता है तो कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है।

3. सीमान्त उत्पाद स्थिर रहता है तो कुल उत्पाद स्थिर दर पर बढ़ता है।

4. जब सीमान्त उत्पाद शून्य होता है तो कुल उत्पाद अधिकतम हो जाता है।

5. जब सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है तो कुल उत्पाद घट रहा होता है।

प्रश्न 129. 'औसत उत्पाद (AP) तथा सीमान्त उत्पाद (MP) में सम्बन्ध को सचित्र समझाइए।

उत्तर- नीचे दर्शाए गए चित्र के सन्दर्भ में औसत उत्पाद (AP) तथा सीमान्त उत्पाद (MP) के बीच निम्नलिखित सम्बन्ध पाया जाता है--

1. जब सीमान्त उत्पाद औसत उत्पाद से अधिक (MP > AP) होता है, औसत उत्पाद बढ़ना चाहिए।

2. जब सीमान्त उत्पाद औसत उत्पाद से कम (MP < AP) होता है, औसत उत्पाद कम होना चाहिए।

3. जब औसत उत्पाद तथा सीमान्त उत्पाद बराबर (AP = MP) होते हैं, औसत उत्पाद अधिकतम होना चाहिए।

4. सीमान्त उत्पाद वक्र सदैव औसत उत्पाद वक्र के बाईं ओर होता है, केवल उस स्थिति को छोड़कर जब दोनों बराबर होते हैं।

5. सीमान्त उत्पाद धनात्मक, ऋणात्मक तथा शून्य हो सकता है परन्तु औसत उत्पाद सदैव धनात्मक होता है।

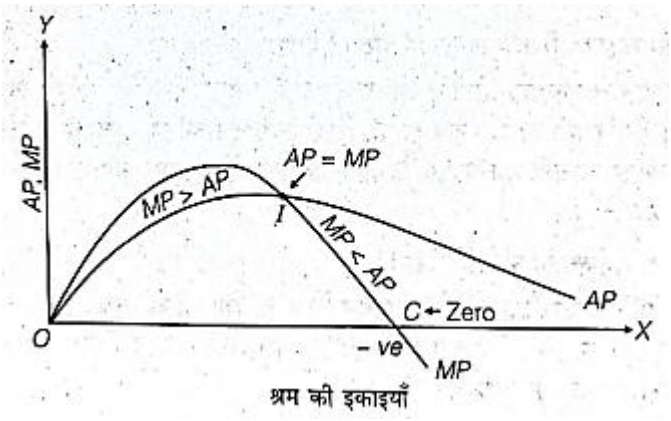

औसत उत्पाद (AP) तथा सीमान्त उत्पाद (MP) के बीच निम्नलिखित सम्बन्ध पाए जाते हैं--

1. औसत उत्पाद बढ़ता है जब सीमान्त उत्पाद, औसत उत्पाद से अधिक होता है।

2. औसत उत्पाद अधिकतम होता है जब सीमान्त उत्पाद और औसत उत्पाद दोनों बराबर होते है

(दिए गए रेखाचित्र में । बिन्दु पर)।

3. औसत उत्पाद घट रहा होता है जब सीमान्त उत्पाद, औसत उत्पाद से कम होता है।

4. सीमान्त उत्पाद धनात्मक, शून्य अथवा ऋणात्मक हो सकता है, किन्तु औसत उत्पाद सदव धनात्मक रहता है।

प्रश्न 130. अल्पकालीन उत्पादन फलन से आप क्या समझते हैं? (2020)

उत्तर- अल्पकाल समय की वह अवधि है जिसमें केवल परिवर्ती कारक के प्रयोग में वृद्धि करके ही उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। परिभाषा से ही, स्थिर कारक स्थिर रहता है। एक बार जब एक प्लांट (एक विशेष उत्पादन क्षमता का) को संस्थापित कर लिया जाता है तो अल्पकाल के दौरान इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। परिवर्तन के लिए अल्पकाल बहुत ही अल्प अवधि होती है। अत: उत्पादन क्षमता (जिसे प्लांट आकार या स्थिर कारक द्वारा दर्शाया जाता है) अल्पकाल के दौरान समान रहती है। जब एक कारक स्थिर कारक है और अन्य परिवर्ती कारक हैं, तब उत्पादन फलन को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है---

$Q_x = f(L, \overline{K})$

(यहाँ, Q_x = वस्तु-X का उत्पादन; L = श्रम, एक परिवर्ती कारक; $\overline{K}$ = पूँजी, एक स्थिर कारक)। इस प्रकार के उत्पादन फलन में, केवल L (परिवर्ती कारक) के प्रयोग में वृद्धि करके ही उत्पादन को बढ़ाया

जा सकता है। निम्नलिखित समीकरण इस बिन्दु की और आगे व्याख्या करता है;

$$40_x = f(5L, 4\overline{K}) \ldots\ldots\ldots\ldots\ldots (i)$$

$$45_x = f(6L, 4\overline{K}) \ldots\ldots\ldots\ldots\ldots (ii)$$

स्पष्ट है कि 4 इकाइयों पर K स्थिर है। वस्तु-x का उत्पादन 40 इकाइयों से बढ़कर 45 इकाइयाँ हो जाता है, क्योंकि L की आगत 5 इकाइयों से बढ़कर 6 इकाइयाँ हो गई है। चूंकि K स्थिर है और केवल L में परिवर्तन होता है, L और K के बीच अनुपात में परिवर्तन की प्रवृत्ति पाई जाती है। यह परिवर्ती अनुपात के नियम (Law of Variable Proportions) का प्रजनन करता है।

प्रश्न 131. ह्रासमान सीमान्त उत्पाद का नियम क्या है? (NCERT)

उत्तर- ह्रासमान सीमान्त उत्पाद का नियम वह स्थिति है जिसमें कुल उत्पाद उस समय घटती हुई दर पर बढ़ता है जब स्थिर कारक या कारकों की निश्चित इकाई के साथ परिवर्तनशील कारक की अधिक इकाइयों का प्रयोग किया जाता है। इस स्थिति में परिवर्तनशील कारक का सीमान्त उत्पाद कम होता जाता है। घटते कारक के प्रतिफल निम्नलिखित कारणों से होते हैं---

1. कारकों का बंधा या स्थिर होना-जैसे---- जैसे परिवर्तनशील कारकों की अधिक-से-अधिक इकाइयों को स्थिर कारक के साथ जोड़ा जाता है तब परिवर्तनशील कारक का अत्यधिक उपयोग हो जाता है, इसलिए ह्रासमान सीमान्त उत्पाद लागू हो जाता है।

2. कारक एक-दूसरे के अपूर्ण प्रतिस्थापक हैं---- उत्पादन के कारक एक-दूसरे के अपूर्ण प्रतिस्थापक हैं। तद्नुसार स्थिर कारक को अन्य कारकों से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है।

3. विभिन्न कारकों के बीच कम समन्वयता---- अन्य कारकों के समान रहने पर, जैसे-जैसे अधिक-से-अधिक परिवर्तनशील कारकों को रोजगार प्राप्त होता है, विभिन्न कारकों के बीच समन्वय दुर्बल (कम) हो जाता है जिससे कि परिवर्तनशील कारक का सीमान्त उत्पाद गिरने लगता है।

प्रश्न 132. अल्पकाल तथा दीर्घकाल की संकल्पनाओं को समझाइए। (NCERT)

अथवा

अल्पकाल एवं दीर्घकाल में भेद कीजिए। (2020)

उत्तर- अल्पकाल में कम-से-कम एक कारक, श्रम अथवा पूँजी में परिवर्तन नहीं किया जा सकता अत: वह स्थिर रहता है। निर्गत स्तर में परिवर्तन लाने के लिए फर्म केवल दूसरे कारक में ही परिवर्तन कर सकती है। जो कारक स्थिर कारक कहलाता है, जबकि दूसरा कारक जिसमें फर्म परिवर्तन कर सकती है, ' परिवर्ती कारक कहलाता है। दीर्घकाल में उत्पादन के सभी कारकों में परिवर्तन लाया जा सकता है। एक फर्म निर्गत के विभिन्न स्तरों का उत्पादन करने के लिए दीर्घकाल में दोनों कारकों में साथ-साथ परिवर्तन ला सकती है। अत: दीर्घकाल में कोई भी स्थिर कारक नहीं है। किसी भी विशेष उत्पादन प्रक्रम में दीर्घकाल साधारणत: अल्पकाल की तुलना में एक दीर्घ समय अन्तराल को प्रकट करता है। विभिन्न उत्पादन प्रक्रमों के लिए दीर्घकाल कालावधि भिन्न हो सकती है। अल्पकाल तथा दीर्घकाल को दिनों, महीनों अथवा वर्षों के रूप में परिभाषित करना उचित नहीं है। हम दीर्घावधि तथा अल्पव्दाधि का सामान्यतः इस दृष्टि को ध्यान में रखकर परिभाषित करते हैं कि सभी आगत परिवर्ती हैं अथवा नहीं।

प्रश्न 133. निम्नलिखित तालिका, श्रम का कुल उत्पादन अनुसूची देती है। तदनुरूप श्रम का औसत उत्पाद तथा सीमान्त उत्पाद अनुसूची निकालिए। (NCERT)

L	कुल उत्पाद $_L$
0	0
1	15
2	35
3	50
4	40
5	48

हल—

L	TP_L	AP_L	MP_L
0	0	—	—
1	15	15	15
2	35	17.5	20
3	50	16.66	15
4	40	10	−10
5	48	9.6	8

प्रश्न 134. सीमान्त लागत का अर्थ समझाइए। (2020)

अथवा

सीमान्त लागत क्या है? (2020)

उत्तर- किसी फर्म के उत्पादन की सीमान्त इकाई को उत्पन्न करने की लागत सीमान्त लागत (MC) कहलाती है। दूसरे शब्दों में, एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से कुल लागत में जो वृद्धि होती है उसे सीमान्त लागत (MC) कहते हैं।

उदाहरण---- माना एक फर्म द्वारा 10 इकाइयाँ पैदा करने की कुल लागत ₹ 700 है। यदि 11 इकाइयाँ पैदा करने पर कुल लागत ₹ 750 हो जाए तो यहाँ फर्म की सीमान्त लागत 750 - 700 =₹ 50 होगी। स्पष्ट है कि फर्म की सीमान्त लागत, एक अतिरिक्त इकाई पैदा करने के कारण फर्म की कुल लागत में होने वाली वृद्धि को बतलाती है। संक्षेप में, सीमान्त लागत उत्पादन की N इकाइयों की कुल लागत तथा N - 1 इकाइयों की लागत का अन्तर है। सूत्रानुसार,

$$MC = TC_{N-}TC_{n-1}$$

$$MC = 750 - 700 = ₹50$$

सीमान्त लागत को एक अन्य सूत्र द्वारा भी व्यक्त किया जा सकता है---

$$MC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q} = \frac{50}{1} = ₹50$$

यहाँ, Δ = परिवर्तन (TC = कुल लागत, Q = उत्पादन की मात्रा।)

उल्लेखनीय है कि सीमान्त लागत (MC) का स्थिर लागत (FC) से कोई सम्बन्ध नहीं होता। सीमान्त लागत रिशर लागत पर निर्भर भी नहीं करती। इसका कारण यह है कि अल्पकाल में उत्पादन की मात्रा बदलने पर भी स्थिर लागतें नहीं बदलतीं, केवल परिवर्तनशील लागते ही बदलती हैं। अत: सीमान्त लागत की उत्पत्ति केवल

जनशील लागतों में परिवर्तन के कारण होती हैं, स्थिर लागतों का सीमान्त लागतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सूत्रानुसार

$$MC_N = TV_N - TVC_{N-1}$$

प्रश्न 135. नीचे दी हुई तालिका, श्रम का औसत उत्पाद अनुसूची बताती है। कुल उत्पाद तथा सीमान्त उत्पाद अनुसूची निकालिए, जबकि श्रम प्रयोगता के शून्य स्तर पर यह दिया गया है कि कुल उत्पाद शून्य है।(NCERT)

L	औसत उत्पाद,
1	2
2	3
3	4
4	4.25
5	4
6	3.5

उतर–

L	AP_L	TP_L	MP_L
1	2	2	2
2	3	6	4
3	4	12	6
4	4.25	17	5
5	4	20	3
6	3.5	21	1

प्रश्न 136. निम्नलिखित तालिका श्रम का सीमान्त उत्पाद अनुसूची देती है। यह भी दिया गया है कि श्रम का कुल उत्पाद शून्य है। प्रयोग के शून्य स्तर पर श्रम के कुल उत्पाद तथा औसत उत्पाद अनुसूची की गणना कीजिए। (NCERT)

L	सीमान्त उत्पाद$_L$
1	3
2	5
3	7
4	5
5	3
6	1

उतर–

L	MP_L	TP_L	AP_L
1	3	3	3
2	5	8	4
3	7	15	5
4	5	20	5
5	3	23	4.6
6	1	24	4

प्रश्न 137. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए----

श्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पाद	औसत उत्पाद	सीमान्त उत्पाद
1	40	---	---
2	80	---	---
3	110	---	---
4	130	---	---
5	140	---	---

6	140	---	---
7	130	---	---

उत्तर–

$$\text{औसत उत्पाद } (AP) = \frac{\text{कुल उत्पाद}}{\text{श्रम की इकाइयाँ}}$$

$$= 40, 40, 36.66, 32.5, 28, 23.33, 18.57$$

$$\text{सीमान्त उत्पाद } (MP) = \text{कुल उत्पाद}_n - \text{कुल उत्पाद}_{n-1}$$

$$= 40, 40, 30, 20, 10, 0, -10$$

प्रश्न 138. एक किसान एक खेत किराए पर लेता है और परिवार के सदस्यों की सहायता से उस पर खेती करता है। इस सूचना के आधार पर स्पष्ट और अन्तर्निहित लागतों की पहचान कीजिए।

उत्तर- खेती करने के लिए एक किसान अपने परिवार के सदस्यों की सहायता लेता है। खेती करने की सेवाओं को बाजार से खरीदा या किराए पर नहीं लिया जाता है। अत: इन सेवाओं में अन्तर्निहित लागतें पाई जाती हैं। यदि परिवार के सदस्य परिवार के खेत की बजाए किसी अन्य व्यक्ति के खेत पर काम करते तो उन्हें मजदूरी प्राप्त होती। इस मजदूरी का उन्हें त्याग करना पड़ा है और यही अन्तर्निहित लागत है। किराए पर लिए गए खेत पर चुकाया गया किराया (लगान) स्पष्ट लागत है क्योंकि उत्पादक ने यह खर्चा बाजार से आगतें (Inputs) खरीदने के लिए किया है।

प्रश्न 139. एक फर्म की कुल स्थिर लागत, कुल परिवर्ती लागत तथा कुल लागत क्या है? वे किस प्रकार सम्बन्धित हैं? (NCERT)

उत्तर- कुल स्थिर लागत (TFC) वह लागत है जिसमें उत्पादन के स्तर में परिवर्तन होने के साथ परिवर्तन नहीं होता है। कुल परिवर्ती लागत (TVC) वह लागत है जिसमें उत्पादन के स्तर में परिवर्तन होने के साथ परिवर्तन होता है। कुल लागत (TC) कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का जोड़ है। अत: TC वक्र TFC तथा TVC वक्रों का ऊर्ध्वाधर जोड़ है।

प्रश्न 140. एक फर्म की औसत स्थिर लागत, औसत परिवर्ती लागत तथा औसत लागत क्या है? वे किस प्रकार सम्बन्धित हैं? (NCERT)

उत्तर- औसत स्थिर लागत (AFC) उत्पादित की गई मात्रा की प्रति इकाई स्थिर लागत है। औसत परिवर्ती लागत (AVC) उत्पादित की गई मात्रा की प्रति इकाई परिवर्ती लागत है। औसत लागत (AC)

औसत स्थिर लागत तथा औसत परिवर्ती लागत का जोड़ है। अत: AC वक्र AFC तथा AVC वक्रों का ऊर्ध्वाधर जोड़ है।

प्रश्न 141. एक ही रेखाचित्र में औसत परिवर्ती लागत,औसत कुल लागत और सीमान्त लागत को दर्शाइए।

अथवा

उपयुक्त रेखाचित्र द्वारा औसत लागत और सीमान्त लागत के सम्बन्ध को प्रदर्शित कीजिए। (2020)

उत्तर- दिए गए रेखाचित्र में औसत कुल लागत (ATC) वक्र, औसत परिवर्ती लागत (AVC) वक्र तथा सीमान्त लागत (MC) वक्र दिखाए गए हैं। तीनों वक्र U-आकार के हैं। सीमान्त लागत (MC) वक्र औसत कल लागत (ATC) वक्र तथा औसत परिवर्ती लागत (AVC) वक्र को उनके न्यूनतम बिन्दुओं (P तथा S) पर ही काटता है।

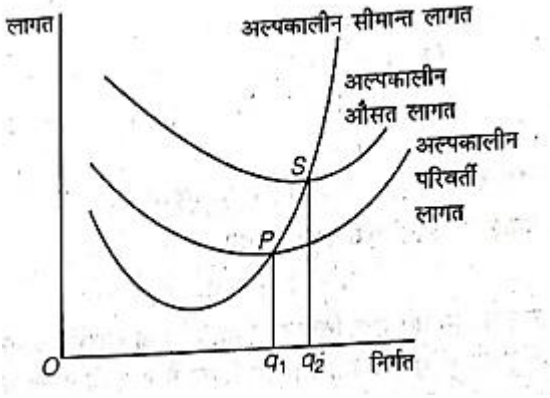

प्रश्न 142. मान लीजिए, एक फर्म का उत्पादन फलन है,

$$Q = 5L^{\frac{1}{2}} K^{\frac{1}{2}}$$

निकालिए, अधिकतम सम्भावित निर्गत जिसका उत्पादन फर्म कर सकती है 100 इकाइयाँ L तथा 100 इकाइयाँ K द्वारा। (NCERT)

उत्तर– दिया है, $Q = 5L^{\frac{1}{2}} K^{\frac{1}{2}}$ [L=100, K=100]

$$Q = 5(100)^{\frac{1}{2}} (100)^{\frac{1}{2}} = 5(100)^{\frac{1}{2}} (10^2)^{\frac{1}{2}}$$

$$= 5 \times 10 \times 10 = 500$$

अतः अभीष्ट अधिकतम उत्पादन 500 है।

प्रश्न 143. मान लीजिए, एक फर्म का उत्पादन फलन है,

$Q=2L^2K^2$

अधिकतम सम्भावित निर्गत ज्ञात कीजिए, जिसका फर्म उत्पादन कर सकती है, 5 इकाइयाँ L तथा 2 इकाइयाँ K द्वारा। अधिकतम सम्भावित निर्गत क्या है, जिसका फर्म उत्पादन कर सकती है शून्य इकाई L तथा 10 इकाई K द्वारा? (NCERT)

हल- दिया है,

$$Q = 2L^2K^2 \qquad [L = 5, K = 2]$$
$$Q = 2\,(5)^2 \times (2)^2$$
$$= 2\,(25) \times (4) = 50 \times 4$$
$$Q = 200 \text{ इकाइयाँ}$$

अधिकतम सम्भावित उत्पादन 200 इकाइयाँ हैं

दिया है, $L = 0, K = 10$

$$Q = 2\,(L)^2\,(K)^2$$
$$Q = 2\,(0)^2\,(10)^2 \quad \Rightarrow \quad Q = 0$$

प्रश्न 144. एक फर्म के लिए शून्य इकाई L तथा 10 इकाइयाँ K द्वारा अधिकतम सम्भावित निर्गत निकालिए, जब इसका उत्पादन फलन है--- (NCERT)

Q= 5L + 2K

हल- दिया है,

Q= 5. + 2K [L = 0, K = 10]

Q= 5 (0) + 2 (10)

Q= 0 + 20

⇒ Q =20

अतः अधिकतम सम्भावित उत्पादन 20 इकाइयाँ हैं।

प्रश्न 145. पैमाने के प्रतिफल से आप क्या समझते हैं? (2020)

उत्तर-- पैमाने का प्रतिफल

पैमाने का प्रतिफल उत्पादन फलन की एक विशिष्ट स्थिति है। जब सभी आगतों के अनुपात में वृद्धि होती है तब निर्गतों में भी उसी अनुपात में वृद्धि होती है। यह स्थिर पैमाना प्रतिफल फलन की स्थिति होती है। वर्धमान पैमाना प्रतिफल वह स्थिति है जब सभी आगतों में समानुपाती वृद्धि के परिणामस्वरूप निर्गत में समानुपाती वृद्धि से अधिक वृद्धि होती है। जब सभी आगतों में आनुपातिक वृद्धि की तुलना में निर्गत में समानुपाती वृद्धि कम होती है तब ह्रासमान पैमाने का प्रतिफल होता है। एक उत्पादन प्रक्रिया में सभी आगत दोगुने हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप निर्गत दोगुना हो जाता है, उत्पादन फलन स्थिर अनुमापी प्रतिफल को प्रकट करता है। यदि निर्गत दोगुने से कम है तो ह्रासमान पैमाना प्रतिफल लागू होता है, यदि यह दोगुने से अधिक है तो वर्धमान पैमाना प्रतिफल लागू होता है।

पैमाने का प्रतिफल

$q = f(x_1, x_2)$

एक उत्पादक फर्म---- निर्गत की मात्रा का उत्पादन कारक 1 की x_1 मात्रा तथा कारक 2 की x_2 मात्रा का प्रयोग करता है। यदि उत्पादक दोनों कारकों के उपयोग के स्तर में $t(t > 1)$ गुणा वृद्धि करते हैं, तब---

$$f(tx_1, tx_2) = t \cdot f(x_1, x_2)$$

प्रश्न 146. सकल राष्ट्रीय उत्पाद एवं शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर बताइए।

उत्तर- सकल राष्ट्रीय उत्पाद-किसी अर्थव्यवस्था में जो भी अन्तिम वस्तुएँ और सेवाएँ एक वर्ष में उत्पादित की जाती हैं, उन सभी के बाजार मूल्य के योग को सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहते हैं। इसमें केवल उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं को लिया जाता है जोकि बाजार में आती हैं। अत: सकल राष्ट्रीय उत्पाद में विदेशों में निवेश एवं विदेशों में प्रदान की गयी अन्य साधन सेवाओं के लिए देश के नागरिकों को विदेशों से प्राप्त आय को सकल घरेलू उत्पाद में जोड़ देना चाहिए। इसी प्रकार देश के अन्दर विदेशियों द्वारा उत्पादित आय को सकल घरेलू उत्पाद से हटा देना चाहिए।

$$GNP = GDP + X - M$$

उपर्युक्त समीकरण में GNP = सकल राष्ट्रीय उत्पाद

GDP = सकल घरेलू उत्पाद

x = देशवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित आय

M = विदेशियों द्वारा देश में अर्जित आय

अत: यदि x = M तो GNP =GDP

निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)----- निवल राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करने के लिए सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में से मूल्य ह्रास व्यय, चल पूँजी का प्रतिस्थापन व्यय, अचल पूँजी का मूल्य ह्रास, मरम्मत और प्रतिस्थापना के लिए किया गया व्यय, कर बीमे की प्रीमियम आदि को घटाना होता है। शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = सकल राष्ट्रीय उत्पाद - हास इसे बाजार मूल्य पर राष्ट्रीय आय भी कहते हैं।

प्रश्न 147. वस्तुओं को मध्यवर्ती और अन्तिम वस्तुओं में वर्गीकृत करने का आधार सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- उत्पादन प्रक्रिया के दौरान उत्पादकों द्वारा कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ अथवा पुनः बिक्री के लिए खरीदी गई वस्तुएँ मध्यवर्ती वस्तुएँ कहलाती हैं। उदाहरण-एक फर्म द्वारा पुनः बिक्री के लिए खरीदी गई कमीज एक मध्यवर्ती वस्तु है। वे वस्तुएँ जो अन्तिम-प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग की जाती हैं, अन्तिम वस्तुएँ कहलाती हैं। उदाहरण-गृहस्थ द्वारा खरीदी गई कमीज एक अन्तिम वस्तु है। वस्तओं का अन्तिम प्रयोग (End-use) वस्तुओं को 'अन्तिम' तथा मध्यवर्ती' में वर्गीकृत करने का आधार है। वस्तएँ तब अन्तिम हैं यदि ये उत्पादन की सीमा रेखा को पार कर जाती हैं और इनके अन्तिम-प्रयोगकर्ताओं (उपभोक्ता अथवा उत्पादक) द्वारा प्रयोग के लिए तैयार हैं। वस्तएँ तब मध्यवर्ती हैं जब ये ठत्पादन की सीमा रेखा के अन्दर हैं और प्रयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग के लिए तैयार नहीं हैं। मध्यवतो वस्तुओं में मृल्य जुड़ना अभी शेष है।

प्रश्न 148. उपभोग वस्तुओं और पूँजीगत वस्तुओं में भेद कीजिए। इनमें से कौन-सी अन्तिम वस्तु है?

अथवा

उपभोग वस्तुओं तथा पूँजीगत वस्तुओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उपभोक्ता वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो उपभोक्ता की आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से सन्तष्टि करती हैं। उपभोक्ता वस्तुओं का प्रयोग अन्तिम वस्तुओं के रूप में इनके प्रयोगकर्ताओं द्वारा किया जाता है।

उटाहरण---- पैन, ब्रेड, मक्खन, सब्जियाँ आदि। इसके विपरीत, पूँजीगत वस्तुएँ वे वस्तएँ हैं जिनका प्रयोग स्थिर परिसम्पत्ति के रूप में, उत्पादकों के द्वारा, अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के

लिए किया जाता है। इन वस्तुओं का बार-बार प्रयोग अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जाता है।

उदाहरण---- इमारत, मशीनरी, ट्रैक्टर आदि। उत्पादकों की स्थिर परिसम्पत्तियों के रूप में पूँजीगत वस्तुओं को अन्तिम वस्तुएँ माना जाता है जबकि उपभोक्ता वस्तओं के सम्बन्ध में यह उनक 'अन्तिम प्रयोग' (End-use) पर निर्भर करता है।

उदाहरण---- मिट्टी के तेल का गृहस्थों द्वारा प्रयोग एक अन्तिम वस्तु है. जबकि कोई फर्म इसका प्रयोग अपनी मशीनरी को साफ करने के लिए करती है तब यह मध्यवर्ती वस्तु है।

प्रश्न 149. कारण बताते हुए, निम्नलिखित को मध्यवर्ती और अन्तिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए---

(a) मशीनों के व्यापारी द्वारा खरीदी गई मशीनें।

(b) एक परिवार द्वारा खरीदी गई कार।

उत्तर- (a) मशीनों के व्यापारी द्वारा खरीदी गई मशीनें एक मध्यवर्ती वस्तु है क्योंकि लाभ कमाने के लिए फर्मों द्वारा मशीनों की पुन: बिक्री कर दी जाती है अथवा इन वस्तुओं में आगे प्रोसेसिंग द्वारा मूल्य जुड़ना अभी बाकी होता है।

(b) एक परिवार द्वारा कार का खरीदना एक अन्तिम वस्तु है क्योंकि परिवार कार का अन्तिम-प्रयोगकर्ता है और कार के मूल्य में अब कोई वृद्धि नहीं होनी है।

प्रश्न 150. कारण बताते हुए निम्नलिखित को मध्यवर्ती उत्पाद और अन्तिम उत्पाद में वर्गीकृत कीजिए

(a) स्कूल द्वारा खरीदा गया फर्नीचर।

(b) स्कूल द्वारा खरीदे गए चाक, डस्टर आदि।

उत्तर- (a) स्कूल द्वारा खरीदा गया फर्नीचर एक अन्तिम उत्पाद है क्योंकि स्कूल फर्नीचर का अन्तिम-प्रयोगकर्ता (Final user) है तथा फर्नीचर में और कोई मूल्य-वृद्धि नहीं की जानी है। इसे निवेश व्यय माना जाएगा क्योंकि स्कूल द्वारा फर्नीचर का प्रयोग कई वर्षों तक किया जाना है और इसका मूल्य भी ऊँचा होता है। यानी

(b) स्कूल द्वारा खरीदे गए चॉक, डस्टर आदि मध्यवर्ती वस्तुओं की खरीद होती है क्योंकि वर्ष के दौरान इनका उपयोग मूल्य-वृद्धि की प्रक्रिया में होता है।

प्रश्न 151. उत्पादन के चार कारक कौन-कौन से हैं और इनमें से प्रत्येक के पारिश्रमिक को क्या कहते हैं? -

उत्तर---

उत्पादन के चार साधना	दिया गया पारिश्रमिक
भूमि	किराया
मजदूर	मजदूरी
पूंजी	ब्याज
उद्यम	लाभ

प्रश्न 152. किसी अर्थव्यवस्था में समस्त अन्तिम व्यय समस्त साधन अदायगी के बराबर क्यों होता है व्याख्या कीजिए।' (NCERT)

उत्तर- किसी भी देश का अन्तिम व्यय उत्पादन के सभी साधनों की आय के बराबर होना चाहिए। (अन्तिम व्यय, अन्तिम वस्तुओं पर किया गया व्यय है।) इसमें मध्यवर्ती वस्तुओं पर किए गए व्यय को शामिल नहीं किया जाता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि सभी फर्मों द्वारा प्राप्य आय को उत्पादन के सभी साधनों के बीच वेतन, मजदूरी, लाभ, ब्याज, लाभार्जन तथा किराए के रूप में वितरित किया जाए।

प्रश्न 153. स्टॉक और प्रवाह में भेद स्पष्ट कीजिए। निवल निवेश और पूँजी में कौन स्टॉक है और कौन प्रवाह? हौज में पानी के प्रवाह से निवल निवेश और पूँजी की तुलना कीजिए। NCERT

अथवा

स्टॉक व प्रवाह में भेद कीजिए। (2020)

उत्तर- स्टॉक तथा प्रवाह में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं---

1. स्टॉक समय के बिन्दु से सम्बन्धित है तथा प्रवाह समय-अन्तराल से सम्बन्धित है। '

2 स्टॉक वह मात्रा है, जो समय के एक निश्चित बिन्दु पर पाई जाती है, जबकि प्रवाह वह मात्रा है, जो एक निश्चित समय-अन्तराल में मापी जाती है।

3. स्टॉक में समय का दृष्टिकोण नहीं होता, जबकि प्रवाह में समय दृष्टिकोण होता है।

4. राष्ट्रीय पूँजी स्टॉक है, जबकि राष्ट्रीय आय एक प्रवाह चर है।

शुद्ध निवेश एक प्रवाह है, जबकि पूँजी स्टॉक है। एक निश्चित अथवा विशेष समय पर टैंक में पानी की मात्रा स्टॉक है, जबकि इसमें डाले गए पानी की मात्रा प्रवाह धारणा है।

प्रश्न 154. आय के चक्रीय प्रवाहों में क्षरण' और 'भरण' की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- चक्रीय प्रवाह की प्रक्रिया से मूल्य का हास क्षरण कहलाता है। परिवार और फर्म अपनी आयो एक अंश को बचाकर रखते हैं, यह चक्रीय प्रवाह में होने वाला मूल्यह्रास 'क्षरण' (Leakages) कहलाता है। क्षरण के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था के आय तथा रोजगार के स्तर पर ऋणात्मक गुणांक प्रभाव पड़ता है। मुख्य क्षरण हैं-(1) बचत, (2) करारोपण तथा (3) आयात।

भरण' (Injections) से अभिप्राय चक्रीय प्रवाह में मूल्य के जोड़ से है। इसका अर्थव्यवस्था के आय रोजगार के स्तर पर धनात्मक गुणांक प्रभाव पड़ता है। मुख्य भरण हैं-(1) सरकार द्वारा किया गया उपभोग अथवा निवेश व्यय तथा (2) निर्यात। ,

प्रश्न 155. मौद्रिक प्रवाह कैसे वास्तविक प्रवाह के विपरीत है?

उत्तर- मौद्रिक प्रवाह, वास्तविक प्रवाह के विपरीत है, क्योंकि वास्तविक प्रवाह के बदले में मौदिक प्रवाह किया जाता है। उदाहरण-उत्पादक क्षेत्र से परिवार क्षेत्र को वस्तुओं तथा सेवाओं का वास्तविक प्रवाह किया जाता है। इसके बदले में परिवार क्षेत्र द्वारा उत्पादक क्षेत्र को भुगतान किया जाता है। फलस्वरूप उपभोग व्यय के रूप में मुद्रा का प्रवाह परिवारों से उत्पादकों की ओर होता है। इसी भाँति परिवार क्षेत्र से उत्पादक क्षेत्र को साधन या कारक सेवाओं के रूप में वास्तविक प्रवाह किया जाता है। इसके बदले में उत्पादक क्षेत्र द्वारा परिवार क्षेत्र को भुगतान किया जाता है। अत: साधन या कारक भुगतान के रूप में मुद्रा का प्रवाह उत्पादकों से परिवारों की ओर होता है।

प्रश्न 156. आय के चक्रीय प्रवाह की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रत्येक अर्थव्यवस्था में होने वाली आर्थिक क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पादन, आय तथा व्यय का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है। इसका न तो कोई अन्त होता है तथा न ही कोई प्रारम्भ। यह एक चक्रीय प्रवाह है। उत्पादन, आय को जन्म देता है। आय के फलस्वरूप वस्तुओं तथा आय का चक्रीय सेवाओं की माँग की जाती है तथा माँग को पूरा करने के लिए व्यय किया जाता है अर्थात् आय, व्यय

को जन्म देती है। व्यय फिर आगे उत्पादन को जन्म देता है। इस चक्रीय प्रवाह को संलग्न रेखाचित्र द्वारा दिखाया गया है।

प्रश्न 157. नियोजित और अनियोजित माल-सूची संचय में क्या अन्तर है? किसी फर्म की माल-सूची और मूल्यवर्धित के बीच सम्बन्ध बताइए। INCERT)

उत्तर- नियोजित माल---- इसका अभिप्राय स्टॉक में उस परिवर्तन से है, जो नियोजित ढंग से होता है। नियोजित माल समावेश की स्थिति में फर्म को अपना माल बढ़ाने के लिए योजना करनी होगी।

अनियोजित माल---- इसका अभिप्राय स्टॉक में उस परिवर्तन से है, जो बिना किसी अपेक्षा के हो जाता है। अनियोजित माल समावेश की स्थिति में विक्रय में अनपेक्षित कमी होने के कारण फर्म को बिना बिका माल संगृहीत करना पड़ेगा।

फर्म के सकल मूल्यवृद्धि = फर्म द्वारा उत्पादित माल का सकल मूल्य (Q) - फर्म द्वारा उपयोग की गई मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य (Z) .

अथवा

सकल मूल्यवृद्धि = फर्म द्वारा विक्रय का मूल्य (V) + स्टॉक में परिवर्तन (A) -(Z)।

प्रश्न-- 158. आय तथा उत्पाद के प्रवाह को 'चक्रीय प्रवाह क्यों कहा जाता है।

उत्तर- आय तथा उत्पाद के प्रवाह को निम्नलिखित तीन कारणों से चक्रीय प्रवाह कहा जाता है--

1. एक दिशा के प्रत्येक वास्तविक प्रवाह के अनुरूप विपरीत दिशा में मुद्रा/आय का प्रवाह होता है।

उदाहरण-परिवार क्षेत्र से कारक सेवाओं का उत्पादक क्षेत्र को प्रवाह (जो कि वास्तविक प्रवाह होता है) के परिणामस्वरूप उत्पादक क्षेत्र से परिवार क्षेत्र को कारक भुगतान (Factor 'Payments) का प्रवाह होता है। (जो कि मौद्रिक प्रवाह है)।

2. एक दो-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में, एक क्षेत्र की प्राप्तियाँ, अन्य क्षेत्र को किए गए भुगतानों के बराबर होती हैं। यदि प्राप्तियाँ किसी कारण भुगतानों से कम हैं (अथवा भुगतान प्राप्तियों से कम हैं) तो चक्रीय प्रवाह एक-न-एक बिन्दु पर अवश्य रुक जाएगा।

3. अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय का सजन तथा व्यय की क्रियाएँ कभी भी रुकती नहीं हैं। ये एक-दूसरे का वृत्ताकार ढंग (Circular Manner) से पीछा करती रहती हैं।

प्रश्न 159. चालू कीमतों और स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय से अभिप्राय अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य से है (जो कि एक अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में उत्पादित की जाती हैं।) तथा जिनका आकलन चालू वर्ष में प्रचलित कीमतों पर किया जाता है। स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय से अभिप्राय अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के बाजार मूल्य से है (जो कि एक अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में उत्पादित की जाती है) तथा जिनका आकलन आधार वर्ष में प्रचलित कीमतों पर किया जाता है। (आधार वर्ष तुलना वाला वर्ष होता है।)

प्रश्न 160. बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद तथा कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर बताइए।

उत्तर- बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद तथा कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं---

क्र.सं.	बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद	कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
1	मूल्यह्रास शामिल होता है।	मूल्यह्रास शामिल नहीं होता।
2	घरेलू उत्पाद घरेलू सीमा में सामान्य निवासियों तथा गैर-निवासियों द्वारा किया गया उत्पाद है।	राष्ट्रीय उत्पाद घरेलू सीमा में तथा विदेशों में सामान्य निवासियों द्वारा किया गया शुद्ध उत्पाद है।
3	इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय शामिल नहीं होती है।	इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय शामिल होती है।
4	बाजार कीमत सकल घरेलू उत्पाद में शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल होते हैं।	कारक लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल नहीं होते हैं।

$NNP_{PC} = GDP_{MP}$- मूल्यह्रास - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय

प्रश्न-- 161. तीनों विधियों से किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद की गणना करने की कोई तीन निष्पत्तियाँ लिखिए। संक्षेप में यह भी बताइए कि प्रत्येक विधि से सकल घरेलू उत्पाद का एक-सा मूल्य क्या आना चाहिए? (NCERT)

उत्तर- राष्ट्रीय आय = राष्ट्रीय उत्पाद = राष्ट्रीय व्यय।

प्रत्येक का परिणाम समान होगा। अन्तर केवल यह है कि उत्पाद विधि में राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन अथवा सृजन स्तर पर की जाती है। आय विधि में राष्ट्रीय आय की गणना वितरण स्तर पर की जाती है तथा व्यय विधि में राष्ट्रीय आय की गणना उपभोग स्तर पर की जाती है।

प्रश्न 162. मान लीजिए कि किसी विशेष वर्ष में किसी देश का सकल घरेलू उत्पाद बाजार कीमत पर ₹1,100 करोड़ था। विदेशों से प्राप्त निवल कारक आय ₹ 100 करोड़ था। अप्रत्यक्ष कर मूल्य-उपदान का मूल्प 150 करोड़ और राष्ट्रीय आय ₹ 850 करोड़ है, तो मूल्यहास के समस्त मूल्य की गणना कीजिए।

उत्तर-- राष्ट्रीय आय अथवा NNP_{PC} = बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद - मूल्यह्रास ।

+ विदेशों से शुद्ध साधन आय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

850 = 1,100 - मूल्यहास + 100 - 150

मूल्यहास = 1,100 + 100 - 150 - 850

मूल्यह्रास = ₹ 200 करोड़

प्रश्न 163. बजटीय और व्यापार घाटा को परिभाषित कीजिए। किसी विशेष वर्ष में किसी देश की कलम के ऊपर निजी निवेश का आधिक्य ₹2,000 करोड़ था। बजटीय घाटे की राशि (-) ₹1500 करोड़ थी। उस देश के बजटीय घाटे का परिमाण क्या था? NCERT

उत्तर- बजट घाटा---- कर द्वारा अर्जित आय की अपेक्षा सरकारी व्यय जितने अधिक होते हैं, उसे ब" घाटा कहते हैं। बजट घाटा =G - T

व्यापारिक घाटा--- एक देश द्वारा अर्जित निर्यात आय की अपेक्षा अतिरिक्त आयात व्यय की मात्रा या घाटा कहलाता है।

व्यापार घाटा = M –x

G - T= (-) ₹1,500 करोड़

I - S= ₹ 2,000 करोड़

व्यापार घाटा = (I - S) + (G -T)

= (2,000) + (-1,500)

= ₹ 500 करोड़

प्रश्न 164. किसी देश विशेष में एक वर्ष में कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद ₹ 1,900 करोड़ है। फर्मों/सरकार के द्वारा परिवार को अथवा परिवार के द्वारा सरकार/फर्मों को किसी भी प्रकार का ब्याज अदायगी नहीं की जाती है, परिवारों की वैयक्तिक प्रयोज्य आय ₹ 1,200 करोड़ है। उनके द्वारा अदा किया गया वैयक्तिक आयकर ₹ 600 करोड़ है और फर्मे तथा सरकार द्वारा अर्जित आय का मूल्य ₹ 200 करोड़ है। सरकार और फर्म द्वारा परिवार को की गई अन्तरण अदायगी का मूल्य क्या है? (NCERT)

उत्तर-- निजी प्रयोज्य आय = NNP_{PC} - फर्मों एवं सरकार को अर्जित प्रतिधारित आय का मूल्य

+ हस्तांतरण भुगतान का मूल्य - वैयक्तिक कर

1,200 = 1,900-200 + हस्तांतरण भुगतान का मूल्य -600

हस्तांतरण भुगतान का मूल्य = 1,200 + 200 + 600-1,900 = ₹ 100 करोड़ का

प्रश्न 165. पूँजी के मूल्यह्रास का अर्थ लिखिए। (2020)

उत्तर- टिकाऊ वस्तुओं के सम्बन्ध में राष्ट्रीय आय का निर्धारण करते समय एक व्यावहारिक समस्या-मूल्यह्रास की पैदा होती है। उत्पादन प्रक्रिया के दौरान एक राष्ट्र की मशीनरी एवं संयन्त्र इत्यादि टट-फट जाते हैं एवं इसका कुछ मूल्य राष्ट्रीय आय का निर्धारण करते समय उत्पादन में शामिल हो जाता है। जिस प्रकार मोटरकार बनाने में स्टील, रबड़ एवं अन्य सामान शामिल हो जाता हैं उसी प्रकार मशीनें और

अन्य साज-सामान का जो उन्हें अन्तिम उत्पाद में बदलते हैं-मूल्य भी उस समयावधि में राष्टीय आय के निर्धारण के समय कम हो जाता है। यदि मशीन का जीवनकाल 10 वर्ष है तो दसवाँ भाग प्रतिवर्ष के उत्पाद में राष्ट्रीय आय का निर्धारण करते समय शामिल हो जाता है। इस प्रकार एक समयावधि में उत्पादित होने वाला मशीनरी, साज-समान एवं भवन अन्तिम उत्पाद हैं एवं राष्ट्रीय आय का निर्धारण करते समय ये कल उत्पाद में शामिल होने चाहिए, परन्तु उस समयावधि में होने वाली मशीनरी एवं साज-सामान की टूट-फूट को इस निर्धारण में से घटा देना चाहिए। वास्तव में व्यवहार में मूल्यह्रास की मात्रा का अनुमान लगाना एक का० समस्या है।

उदाहरणार्थ--- एक वर्ष मूल्यह्रास की मात्रा का अनुमान उस साज-सामान के मूल्य को उसके जीवनकाल विभाजित करके लगाया जा सकता है, परन्तु समस्या यह है कि एक मशीन के जीवनकाल को कैसे निश्चित किया जाए जब तक कि वह समाप्त नहीं हो जाती। तब उसका अनुमान ही लगाया जा सकता है और वह अनमान गलत भी हो सकता है। इसके अलावा यदि मशीनरी की कीमत उन वर्षों में बढ़ जाती है, तब उसक प्रतिस्थापना लागत बढ़ जाएगी और यदि तकनीकी उन्नति के फलस्वरूप एक मशीनरी अपने प्रत्यार जीवनकाल से पहले ही अप्रचलित हो जाती है तब क्या होगा। ऐसी अनेक बातों के कारण राष्ट्रीय आ निर्धारण के समय मूल्यह्रास का सही अनुमान लगाना एक कठिन समस्या है। इस कारण उत्पाद का सक निर्धारण ही निवल निर्धारण से श्रेष्ठ है।

प्रश्न 166. राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह के तीन चरणों में से प्रत्येक में उसका मापन करने के लिए किस प्रकार के आँकड़ों की आवश्यकता पड़ती है?

उत्तर- राष्ट्रीय आय के विभिन्न चरणों में माप करने के लिए निम्नलिखित आँकड़ों की आवश्यकता होती है

1. उत्पादन चरण---- कारक लागत पर प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र में शुद्ध मूल्य वृद्धि तथा विदेशों से शुद्ध कारक आय सम्बन्धी आँकड़े।

2. आय चरण---- शुद्ध लगान, शुद्ध ब्याज, शुद्ध मजदूरी तथा शुद्ध लाभ व विदेशों से शुद्ध कारक आय सम्बन्धी आँकड़े।

3. व्यय चरण--- निजी अन्तिम उपभोग व्यय, सरकारी अन्तिम उपभोग व्यय, सकल घरेलू पूँजी निर्माण, शुद्ध निर्यात, मूल्यह्रास, शुद्ध अप्रत्यक्ष कर तथा विदेशों से शुद्ध कारक आय सम्बन्धी आँकड़े।

प्रश्न 167. एक देश के GDP को तीन विधियों द्वारा मापने की तीन समरूपताएँ लिखिए। संक्षेप में बताइए कि इनमें से प्रत्येक को समान मूल्य क्यों प्रदान करना चाहिए?

उत्तर--- GDP को मापने की तीन समरूपताएँ

मूल्य वृद्धि सृजित आय के समरूप है क्योंकि मूल्य वृद्धि (NDP के रूप में) परिवारों, जो उत्पादन के साधनों के स्वामी होते हैं, के बीच कारक आय के रूप में वितरित की जाती है। पुन: GDP (मूल्य वृद्धि के रूप में) अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं पर किए गए व्यय के समरूप होता है क्योंकि व्यय का मूल्य

एक लेखा वर्ष के दौरान घरेलू अर्थव्यवस्था में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार मूल्य होता है।

प्रश्न 168. राष्ट्रीय आय संगणना की विधियों का उल्लेख कीजिए तथा किसी एक विधि का वर्णन कीजिए। 2020

उत्तर--- राष्ट्रीय आय संगणना की विधियाँ

राष्ट्रीय आय संगणना की तीन प्रमुख विधियाँ हैं-(1) उत्पाद विधि अथवा मूल्यवर्धित विधि, (2) व्यय विधि तथा (3) आय विधि। इन तीनों विधियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

1. उत्पाद विधि अथवा मूल्यवर्धित विधि--- इस विधि द्वारा बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि (अथवा सकल घरेलू उत्पाद) को एक लेखा वर्ष के दौरान एक देश की घरेलू सीमा के भीतर सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा की गई मूल्य वृद्धि के रूप में मापा जाता है। इसे राष्ट्रीय आय (NNP_{PC}) प्राप्त करने के लिए समायोजित किया जाता है।

2. व्यय विधि--- इस विधि द्वारा बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद को एक लेखा वर्ष के दौरान एक देश की घरेलू सीमा के अन्दर उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं की खरीद पर किए गए ' व्यय के कुल जोड़ (उपभोग व्यय तथा निवेश व्यय) के रूप में मापा जाता है।

3. आय विधि--- इस विधि द्वारा घरेलू आय को एक लेखा वर्ष के दौरान एक देश का घरलू सीमा के अन्दर सृजित कारक आय के कुल जोड़ (लगान + ब्याज + लाभ + मजदूरी) के रूप में मापा जाता है।

- **व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना**

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न में प्रश्न 6 का उत्तर देखें।

प्रश्न 169. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में आने वाली दोहरी गणना की समस्या एक उदाहरण देकर समझाइए। इस समस्या से बचने के दो वैकल्पिक उपाय भी बताइए।

उत्तर- दोहरी गणना से अभिप्राय है---- किसी वस्त के मुल्य की गणना एक बार से अधिक करना। इसके फलस्वरूप उत्पादित वस्तु और सेवाओं के मल्य में अनावश्यक रूप से वृद्धि हो जाती है। घरेलू उत्पाद के मूल्य में अनावश्यक रूप से वृद्धि को रोकने में ही दोहरी गणना को रोकने का महत्त्वं निहित है। उदाहरणार्थ-माना एक किसान एक टन गेहँ का उत्पादन करता है और उसे ₹400 में आटा

मिल का बच देता है। आटा मिल उसका आटा बनाकर उसे ₹600 में डबलरोटी बनाने वाले को बेच देती है। डबलराटा वाला उसकी डबलरोटी बनाकर उसे ₹ 800 में दुकानदार को बेच देता है। दुकानदार डबलरोटियों को अन्तिम ग्राहक को ₹900 में बेच देता है। इस प्रकार

उत्पादन का मूल्य = ₹ 400 + ₹ 600 + ₹ 800 + ₹ 900 = ₹2,700 होगा।

दोहरी गणना के कारण उत्पादन का मूल्य बढ़कर ₹2,700 हो जाता है जबकि वास्तव में केवल ₹900 की मूल्य वृद्धि हुई है। इसका कारण यह है कि गेहूँ का मूल्य चार बार, आटे का मूल्य तीन बार, बेकरी वाले की सेवाओं का मूल्य दो बार जोड़ा गया है। अन्य शब्दों में, गेहूँ का मूल्य तथा आटा बनाने वाले और बेकरी वाले की सेवाओं के मूल्य को एक बार से अधिक जोड़ा गया है। इसी को दोहरी गणना की गलती कहा जाता है। दोहरी गणना की गलती से दो विधियों द्वारा बचा जा सकता है

1. अन्तिम उत्पादन विधि (Final output Method)--- इस विधि के अन्तर्गत उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को घटा दिया जाता है अर्थात् अन्तिम वस्तुओं के मूल्य को जोड़ा जाता है। ऊपर के उदाहरण में अन्तिम वस्तु अर्थात् डबलरोटी का मूल्य ₹900 है। इसे ही राष्ट्रीय आय के आकलन में शामिल किया जाना चाहिए।

2. मूल्य वृद्धि विधि (Value Added Method)-इस विधि द्वारा उत्पादन के प्रत्येक चरण में होने वाली मूल्य वृद्धि को जोड़ा जाता है। ऊपर के उदाहरण में उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं में ₹400 + ₹ 200 + ₹ 200 + ₹ 100 = ₹ 900 की मूल्य वृद्धि हुई है।

प्रश्न 170. वास्तविक GDP के महत्त्व को समझाइए।

उत्तर- निम्न अवलोकन वास्तविक GDP अथवा स्थिर कीमतों पर GDP के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं

1. वस्तओं एवं सेवाओं की उपलब्धता में परिवर्तन-एक देश के लोगों को उपलब्ध होने वाली वस्तुओं और सेवाओं में परिवर्तन का ज्ञान केवल वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद के अनुमानों से ही हो सकता है क्योंकि वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तन तभी होता है जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह में परिवर्तन होता है।

2. आर्थिक गतिविधियों के स्तर में परिवर्तन-वास्तविक GDP देश की आर्थिक गतिविधियों के स्तर में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। वास्तविक GDP में वृद्धि से अभिप्राय आर्थिक गतिविधियों के स्तर में होने वाली वृद्धि अथवा उत्पादन के स्तर में होने वाली वृद्धि से है।

3. अन्तक्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-उत्पादन के स्तर अथवा आर्थिक गतिविधियों के स्तर की अन्तक्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय तुलना में वास्तविक GDP ही सहायक होता है। मौद्रिक GDP द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती।

प्रश्न-- 171. किसी देश के कल्याण के निर्देशांक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की कछ सीमाओं को लिखो।

उत्तर- किसी देश के कल्याण के निर्देशांक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की सीमाएँ अग्रलिखित हैं---

1. राष्ट्रीय आय के अंक देश की जनसंख्या, कुशलता तथा संसाधनों का कोई संकेत नहीं देते। एक देश की राष्ट्रीय आय अधिक हो सकती है, परन्तु यदि यह लगातार बढ़ती जनसंख्या द्वारा उपभोग कर ली जाए, तो लोगों का कल्याण स्तर नीचा होगा।

2. समान रूप से, देश के विस्तृत क्षेत्र के कारण भी राष्ट्रीय आय की मात्रा अधिक हो सकती है अथवा एक देश में कुछ संसाधनों के केन्द्रीयकरण के कारण भी राष्ट्रीय आय अधिक हो सकती है। इसका एक अच्छा उदाहरण अरब देश हैं, जिनकी आय तेल संसाधनों के केन्द्रीयकृत होने के कारण अधिक है, परन्तु वहाँ के लोग सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं।

3. राष्ट्रीय आय देश में कीमत स्तर को ध्यान में नहीं रखती। लोगों की आय तो अधिक होती है, इस परन्तु ऊँचे कीमत स्तर के कारण रहन-सहन का स्तर तो ऊँचा नहीं हो पाता।।

4. देश की ऊँची राष्ट्रीय आय केवल कुछ उद्योगपतियों द्वारा अधिक अंशदान के कारण भी हो सकती है, परन्तु ऐसी स्थिति में केवल कुछ लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठता है अन्य सभी का जीवन-स्तर नीचा रहता है। इस प्रकार, यदि जनसंख्या का एक छोटा वर्ग GNP के बड़े हिस्से को पाता है तथा जनसंख्या का बड़ा वर्ग GNP का छोटा हिस्सा पाता है, तो आर्थिक विकास देश के सबसे कमजोर वर्ग तक नहीं पहुंच पाता।

5. एक अन्य तत्व जो राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं होता, वह देश में बेरोजगारी का स्तर है। यदि बेरोजगारी का स्तर ऊँचा है, तो लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा नहीं होगा। लोगों के आर्थिक कल्याण का स्तर नीचा रहेगा, जब तक बेरोजगारी समाप्त नहीं हो जाती।

6. राष्ट्रीय आय उत्पादन के सम्मिश्रण को नहीं दर्शाती। यदि उत्पाद मिश्रण में युद्ध उत्पाद; जैसे– विस्फोटक, बन्दूकें, बम अधिक हैं, तो विनाश बढ़ेगा और कल्याण घटेगा। समान रूप से, राष्ट्रीय आय में वृद्धि उन उत्पादों में वृद्धि से होगी जो सामाजिक रूप से वांछित नहीं है;

जैसे-नशीली दवाएँ आदि। इससे लोगों के कल्याण में कोई वृद्धि नहीं होती।

7. राष्ट्रीय आय अथवा आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि होने पर औद्योगीकरण तथा शहरीकरण में वृद्धि होती है, जिससे वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है। इससे दुर्घटनाएँ, जल की कमी, आवास समस्याएँ आदि बढ़ती हैं। अन्य शब्दों में राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर पर्यावरणीय स्तर गिरता है, जो लोगों के कल्याण को घटाता है। इस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि GNP तथा आर्थिक कल्याण सकारात्मक रूप से एक-दूसरे से सम्बन्धित नहीं हैं।

GNP में वृद्धि से आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न-- 172. सकल निवेश एवं शुद्ध निवेश में भेद कीजिए।

उत्तर- सकल निवेश तथा शुद्ध निवेश में भेद

क्र० सं०	सकल निवेश	शुद्ध निवेश
1.	इसमें एक लेखा वर्ष के दौरान उत्पादकों द्वारा नई परिसम्पत्तियों की खरीद पर किया गया व्यय तथा वर्तमान परिसम्पत्तियों के पुन: स्थापना पर किया गया व्यय दोनों शामिल होते हैं।	इसमें केवल उत्पादक द्वारा नई परिसम्पत्तियों की खरीद पर किया गया व्यय शामिल होता है। विशेष रूप से, इसमें उत्पादकों द्वारा वर्तमान परिसम्पत्तियों के पुन:स्थापन पर किया गया व्यय शामिल नहीं होता।
2.	इसमें पुन:स्थापन निवेश (=स्थिर परिसम्पत्तियों का मूल्यह्रास) शामिल होता है।	इसमें पुन:स्थापन निवेश शामिल नहीं होता।
3.	यह वर्तमान पूँजी के स्टॉक में हुई शुद्ध वृद्धि को प्रकट नहीं करता।	यह वर्तमान पूँजी के स्टॉक में हुई शुद्ध वृद्धि को प्रकट करता है।

प्रश्न 173. सार्वजनिक वस्तु सरकार के द्वारा ही प्रदान की जानी चाहिए, क्यों? व्याख्या कीजिए। (NCERT)

अथवा

"सार्वजनिक वस्तुएँ सरकार के द्वारा ही प्रदान की जानी चाहिए।" व्याख्या कीजिए। 2020

अथवा

सार्वजनिक वस्तु किसे कहते हैं? [2020)

उत्तर- सरकार निश्चित वस्तुओं तथा सेवाओं को उपलब्ध करवाती है, जिन्हें बाजार-तन्त्र के द्वारा उपलब्ध नहीं करवाया जा सकता अर्थात् उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों में विनिमय के द्वारा उपलब्ध

नहीं करवाया जा सकता। इस प्रकार की वस्तुओं के उदाहरण हैं-राष्ट्रीय सुरक्षा, सड़कें तथा सरकारी प्रशासन, जिन्हें सार्वजनिक वस्तुएँ कहा जाता है।

सार्वजनिक वस्तुओं की पूर्ति सरकार को ही क्यों करनी चाहिए, इसके लिए सर्वप्रथम हमें निजी वस्तुओं; जैसे-कपड़े, कार, खाद्य सामग्री तथा सार्वजनिक वस्तुओं में अन्तर समझना होगा। इनमें दो मुख्य अन्तर हैं–पहला, सार्वजनिक वस्तुएँ सभी के लिए उपलब्ध हैं तथा इनके लाभ किसी एक विशेष उपभोक्ता तक ही सीमित नहीं हैं। उदाहरणार्थ-यदि एक व्यक्ति चॉकलेट खाता है या कमीज पहनता है, तो ये वस्तुएँ

अन्य व्यक्तियों के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगी अर्थात् इस व्यक्ति के उपभोग तथा अन्य व्यक्तियों के उपयोग में .. प्रतिद्वंद्वी सम्बन्ध है। लेकिन यदि हम सार्वजनिक पार्क या वायु प्रदूषण नियन्त्रित करने के उपायों की बात

करें, तो इनके लाभ सभी के लिए उपलब्ध होंगे। एक व्यक्ति द्वारा एक वस्तु का उपभोग दूसरों के लिए उसके उपयोग की उपलब्धता को कम नहीं करेगा। अतः एक साथ कई लोग इनका लाभ उठा सकते हैं, अर्थात यहाँ कई लोगों का उपभोग प्रतिद्वंद्वात्मक नहीं होगा।

दूसरा, निजी वस्तुओं के सन्दर्भ में, जो व्यक्ति वस्तुओं के लिए भुगतान नहीं करता, उसे इनका लाभ उठाने से वंचित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ-यदि आप टिकट न खरीदें, तो आपको सिनेमाघर में फिल्म देखने की अनुमति नहीं मिलेगी। लेकिन सार्वजनिक वस्तुओं के सन्दर्भ में, किसी को भी वस्तु का लाभ उठाने से वंचित करने का कोई साध्य (कारंगर) तरीका नहीं है। इसीलिए सार्वजनिक वस्तुओं को गैर-अपवर्जनीय कहा जाता है। यदि कुछ उपभोक्ता भुगतान नहीं भी करते हैं तो भी सार्वजनिक वस्तुओं के लिए शुल्क एकत्रित करना कठिन ही नहीं, अपितु बहुत बार असम्भव हो जाता है। इन भुगतान दिए बिना उपयोग करने वालों को मुफ्तखोर कहा जाता है। उपभोक्ता ऐच्छिक रूप से उन चीजों के लिए भुगतान नहीं करेंगे, जिन्हें वे मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं या जिनके लिए मालिकाना अधिकार अनन्य (स्पष्ट) नहीं है। उत्पादक तथा उपभोक्ता के बीच भुगतान प्रक्रिया के द्वारा स्थापित होने वाली कड़ी टूट जाती है। ऐसे में, इस प्रकार की वस्तुओं को उपलब्ध करवाने के लिए सरकार का आगे आना आवश्यक है। अत: इससे स्पष्ट है कि सार्वजनिक वस्तु सरकार के द्वारा ही प्रदान की जानी चाहिए।

प्रश्न 174. सरकारी बजट का 'संसाधनों का आबंटन' उद्देश्य समझाइए।

अथवा

एक अर्थव्यवस्था में संसाधनों का पुनः आबंटन करने में सरकारी बजट कैसे सहायक हो सकता है? समझाइए।

उत्तर- ऐसा माना जाता है कि बाजार अर्थव्यवस्थाएँ संसाधनों के इष्टतम आबंटन को प्राप्त कर लेती हैं, वे ऐसी वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करती हैं जिन्हें उपभोक्ता खरीदना चाहते हैं। परन्तु पूर्ति तथा माँग की बाजार शक्तियों के माध्यम से संसाधनों का इष्टतम आबंटन प्राप्त करने का अभिप्राय अनिवार्य रूप से सामाजिक कल्याण के रूप में संसाधनों का कुशल आबंटन होना नहीं है। सामाजिक कल्याण बहुधा प्रभावित होता है जब बाजार शक्तियाँ पर्याप्त मात्रा में ऐसी सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं जिनसे समाज की सामूहिक आवश्यकताएँ सन्तुष्ट हो सकें। यह अर्थव्यवस्थाएँ उत्पादन की बाह्यताओं का अनुमान लगाने में भी असफल होती है जो प्राय: पर्यावरणीय अवक्षय (जिसमें पर्यावरणीय प्रदूषण तथा गैर-नवीकरणीय संसाधनों का अत्यधिक शोषण शामिल है) के कारण होने वाली सामाजिक हानि का कारण है।

अपनी बजट नीति के द्वारा सरकार सार्वजनिक वस्तुओं (जैसे–कानून तथा व्यवस्था, सुरक्षा, सामाजिक प्रशासन) की पूर्ति के लिए प्रावधान बनाती है। यह स्वच्छ ऊर्जा (CNG, LPG, सौर तथा वायु ऊर्जा) के उपयोग पर आर्थिक सहायता प्रदान करके पर्यावरणीय मुद्दों का भी वर्णन करती है।

प्रश्न 175. सरकारी बजट का क्या महत्व है?

उत्तर- सरकारी बजट का महत्व निम्नलिखित है---

1. यह सरकार की राजकोषीय नीति (राजस्व तथा व्यय नीति) को प्रतिबिम्बित करता है। यह देश की संवृद्धि तथा विकास की गति को मार्ग देता है। यह स्पष्ट करता है कि कैसे सरकार देश के संसाधनों के आबंटन को प्रभावित करती है।

2. यह प्राथमिक घाटे को प्रतिबिम्बित करता है। ये सभी घाटे मिलकर देश में वित्तीय अनशासन की मात्रा को बताते हैं। घाटों का उच्च स्तर देश में आर्थिक स्थिरता की ऊँची मात्रा को बताता है।

3. सरकारी बजट राजकोषीय नीति का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। अक्सर इसका उपयोग देश में स्फीतिक/अवस्फीतिक अन्तराल की स्थितियों को ठीक करने में किया जाता है।

4. सरकारी बजट आय तथा धन के वितरण में समानता प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयत्नों को प्रतिबिम्बित करता है।

प्रश्न 176. आय की असमानताओं को कम करने के लिए बजटीयनीति का उपयोग कैसे किया जा सकता।

उत्तर- सरकारी बजट अर्थव्यवस्था में आय तथा सम्पत्ति के पुनर्वितरण द्वारा आय की असमानताओं को कम करने में सहायता कर सकता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सरकार कराधान तथा आर्थिक सहायता के वित्तीय उपकरणों का उपयोग करती है। धनी वर्ग पर कर लगाकर तथा निर्धन वर्ग को आर्थिक सहायता प्रदान करके सरकार समाज के निर्धन वर्ग के पक्ष में आय का पुनर्वितरण करती है। निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या को उचित मूल्यों की दुकानों द्वारा खाद्यान्नों का वितरण इस दिशा में महत्त्वपर्ण कदम है। आय तथा सम्पत्ति का न्यायपूर्ण वितरण सामाजिक न्याय का प्रतीक है।

प्रश्न 177. बजट के उद्देश्यों को समझाइए।

अथवा

सरकार बजट द्वारा किन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करती है?

उत्तर- बजट एक वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च तक) के लिए सरकार के अनुमानित व्यय और प्राप्तियों का वार्षिक ब्यौरा होता है। सरकार बजट द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करती है

1. संसाधनों का पुनः आबंटन---- देश में सामाजिक कल्याण में वृद्धि करने के लिए सरकार जनहितों के अनुरूप संसाधनों को पुनः आबंटित करने का प्रयास करती है।

2. आय का पुनः वितरण---- सरकार करारोपण तथा अनुदान द्वारा आय के पुनः वितरण का प्रयास. करती है।

3. आर्थिक स्थिरीकरण---- सरकार अपनी प्राप्तियों तथा व्यय की नीतियों द्वारा आर्थिक स्थिरता लाने का प्रयास करती है।

4. सार्वजनिक व्यय तथा आर्थिक संवृद्धि-सरकार सार्वजनिक उद्यमों की स्थापना करके, देश में आर्थिक विकास तथा संवृद्धि की गति को तीव्र करने का प्रयास करती है।

प्रश्न 178. राजस्व प्राप्तियों से क्या अभिप्राय है।

अथवा

सरकार की राजस्व प्राप्तियों के घटकों की व्याख्या कीजिए।

अथवा

सरकारी बजट में राजस्व प्राप्तियाँ क्या हैं? 2020

उत्तर- राजस्व प्राप्तियाँ वे प्राप्तियाँ हैं जिनसे न तो कोई देयता उत्पन्न होती है और न ही परिसम्पत्तियों में कमी आती है। राजस्व प्राप्तियाँ मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं

1. कर राजस्व प्राप्तियाँ— ये प्राप्तियाँ सभी प्रकार के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों; जैसे-आयकर, निगम कर, सम्पत्ति कर, उपहार कर, बिक्री कर, उत्पादन शुल्क आदि से प्राप्त होती हैं।

2. गैर-कर (करेतर) राजस्व प्राप्तियाँ– ये वे प्राप्तियाँ हैं जो करों को छोड़कर अन्य स्रोतों से मिलती हैं। इसमें ब्याज, लाभांश, लाभ, विदेशी ग्रांट्स आदि आते हैं।

प्रश्न 179. पूँजीगत प्राप्तियों से आपका क्या अभिप्राय है? मुख्य पूँजीगत प्राप्तियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर- पूँजीगत प्राप्तियाँ वे प्राप्तियाँ हैं जिनसे सरकार की देयता उत्पन्न होती है या परिसम्पत्तियाँ कम होती है। पूँजीगत प्राप्तियों की मदें इस प्रकार हैं-(1) ऋणों की वसूली जैसे राज्य सरकारों, संघ शासित क्षेत्रों तथा अन्यों से वापस मिलने वाले ऋण; (2) इसके अन्तर्गत रिजर्व बैंक, बाजार तथा अन्य स्रोतों से लिए गए ऋणों को शामिल किया जाता है तथा (3) अन्य प्राप्तियाँ; जैसे–विनिवेश।

प्रश्न 180. सरकारी बजट में राजस्व प्राप्तियों और पूँजीगत प्राप्तियों के तीन-तीन स्रोत बताइए।

उत्तर- सरकारी बजट की राजस्व प्राप्तियों के स्रोत--- 1. प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर, 2. ब्याज तथा 3. सरकार द्वारा किए गए निवेश पर लाभांश।

सरकारी बजट की पूँजीगत प्राप्तियों के स्रोत---

1. राज्य सरकारों, संघ शासित क्षेत्रों तथा अन्य पक्षों से ऋण की वसूली,

2. बाजार, रिजर्व बैंक तथा अन्य स्रोतों से लिए गए ऋण तथा

3. विनिवेश से प्राप्तियाँ।

प्रश्न 181. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में अन्तर बताइए।

उत्तर- कर सरकार द्वारा लगाया गया एक अनिवार्य भुगतान है। प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं- ..

1. अन्तिम भार--- प्रत्यक्ष कर का अन्तिम भार उसी व्यक्ति को उठाना पड़ता है जो सरकार को कर का भुगतान करता है। इसके विपरीत अप्रत्यक्ष कर जिसका सरकार को भुगतान एक व्यक्ति करता है किन्तु अन्तिम भार किसी अन्य व्यक्ति को उठाना पड़ता है।

2: कर का टालना---- प्रत्यक्ष कर को दूसरे व्यक्तियों पर नहीं टाला जा सकता है जबकि अप्रत्यक्ष कर को दूसरे व्यक्तियों पर टाला जा सकता है।

3. प्रगतिशीलता---- प्रत्यक्ष कर साधारणतः प्रगतिशील होते हैं। इनका वास्तविक भार निर्धन व्यक्तियों की तुलना में धनी व्यक्तियों पर अधिक पड़ता है। इसके विपरीत अप्रत्यक्ष कर साधारणतः प्रतिगामी होते हैं। इनका वास्तविक भार धनी व्यक्तियों की तुलना में निर्धन व्यक्तियों पर अधिक पड़ता है।

उदाहरण-- एक दुकानदार बिक्री कर का भुगतान सरकार को करता है किन्तु प्रायः वह उसे वस्त की कीमत में शामिल करके ग्राहक से वसूल कर लेता है। इस प्रकार बिक्री कर (अप्रत्यक्ष कर) का भार अन्तत मा पर डाल दिया जाता है किन्तु आय कर (प्रत्यक्ष कर) के भार को अन्ततः कर देने वाले को स्वयंदी पड़ता है। वह इसके भार को अन्य व्यक्तियों पर नहीं डाल सकता।

प्रश्न 182. राजस्व व्यय और पूँजीगत व्यय में भेद कीजिए। (NCERT)

उत्तर- राजस्व व्यय- राजस्व व्यय केन्द्र सरकार का भौतिक या वित्तीय परिसम्पत्तियों के सजन के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों के लिए किया गया व्यय है। राजस्व व्यय का सम्बन्ध सरकारी विभागों के सामान्य कार्यों तथा विविध सेवाओं, सरकार द्वारा उपगत ऋण ब्याज अदायगी, राज्य सरकारों और अन्य दलों को प्रदत्त अनुदानों (यद्यपि कुछ अनुदानों से परिसम्पत्तियों का सृजन भी हो सकता है) आदि पर किए गए व्यय से होता है।

बजटीय दस्तावेज में कुल राजस्व व्यय को योजनागत और गैर- योजनागत व्यय मदों में बाँटा जाता है। योजनागत राजस्वगत व्यय का सम्बन्ध केन्द्रीय योजनाओं (पंचवर्षीय योजनाओं) और राज्यों तथा संघ-शासित प्रदेशों की योजना के लिए केन्द्रीय सहायता से है। गैर-योजनागत व्यय राजस्व व्यय का अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण घटक है, जिसमें सरकार द्वारा प्रदत्त सामान्य, आर्थिक और सामाजिक सेवाओं पर व्यापक व्यय शामिल होते हैं। गैर-योजनागत व्यय के प्रमुख मदों में ब्याज अदायगी, प्रतिरक्षा सेवाएँ, उपदान, वेतन और पेंशन आते हैं।

पूँजीगत व्यय---- ये सरकार के वे व्यय हैं जिनके परिणामस्वरूप भौतिक या वित्तीय परिसम्पत्तियों का सृजन यो वित्तीय दायित्वों में कमी होती है। पूँजीगत व्यय के अन्तर्गत भूमि अधिग्रहण, भवन निर्माण,

मशीनरी, उपकरण, शेयरों में निवेश और केन्द्र सरकार के द्वारा राज्य सरकारों एवं संघ-शासित प्रदेशों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा अन्य पक्षों को प्रदान किए गए ऋण और अग्रिम सम्बन्धी व्ययों को शामिल किया जाता है। पूँजीगत व्यय को भी बजट दस्तावेज में योजना और गैर-योजनागत व्यय के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। वित्त व्यय के अन्तर्गत योजना एवं गैर-योजना में अन्तर स्थापित किया गया है। इस वर्गीकरण के अनुसार, योजनागत पूँजीगत व्यय का सम्बन्ध राजस्व-व्यय के समान, केन्द्रीय योजना और राज्य तथा संघ-शासित प्रदेशों की योजनाओं के लिए केन्द्रीय सहायता से होता है। गैर-योजनागत पूँजी व्यय में सरकार द्वारा प्रदत्त विविध सामान्य, सामाजिक और आर्थिक सेवाओं पर व्यय शामिल होते हैं।

प्रश्न 183. कारण बताते हुए, निम्नलिखित को राजस्व व्यय और पूँजीगत व्यय में वर्गीकृत कीजिए

(a) आर्थिक सहायता

(b) राज्य सरकारों को दिया गया अनुदान

(c) ऋणों की अदायगी

(d) पाठशाला भवनों का निर्माण।

उत्तर- (a) आर्थिक सहायता---- यह एक राजस्व व्यय है क्योंकि यह सरकार की देयता को कम नहीं करता और सरकार की परिसम्पत्ति को बढ़ाता नहीं है।

(b) राज्य सरकारों को दिया गया अनुदान---- यह एक राजस्व व्यय है क्योंकि यह सरकार की देयता को कम नहीं करता और सरकार की परिसम्पत्ति को बढ़ाता नहीं है। (परम्परा अनसार केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों को दिए गए अनुदान को राजस्व व्यय माना जाता है। यद्यपि कुछ अनुदान पूँजी सृजन करता है)

(c) ऋणों की अदायगी--- यह एक पूँजीगत व्यय है,क्योंकि ऋणों की अदायगी देयता को घटाता है।

(d) पाठशाला भवनों का निर्माण---- यह एक पूँजीगत व्यय है क्योंकि यह सरकार की परिसम्पत्ति में वृद्धि लाता है।

प्रश्न 184. घाटे में कटौती के विषय पर विमर्श कीजिए। (NCERT)

उत्तर- करों में वृद्धि अथवा सार्वजनिक व्यय में कटौती से सरकारी घाटे में कमी की जा सकती है। सरकार विभिन्न प्रकार से राजस्व में वृद्धि करने का प्रयास करती है; जैसे-(1) प्रत्यक्ष करों में वद्धि

करके (क्योंकि अप्रत्यक्ष कर प्रतिगामी प्रकृति के होते हैं) तथा (2) सार्वजनिक उपक्रमों में उपनिवेश करके (सार्वजनिक उपक्रमों के अंशों की बिक्री करके) किन्तु इस दिशा में सरकारी व्यय में कटौती अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है। सरकारी व्यय में कटौती सुनियोजित कार्यक्रमों को अपनाकर तथा प्रशासनिक कार्यकुशलता को बढ़ाकर की जा सकती है। सरकार गैर-उत्पादक कार्यक्रमों को निकालकर भी अपने व्यय में कटौती कर सकती है।

प्रश्न 185. सरकारी घाटे और सरकारी ऋण-ग्रहण में क्या सम्बन्ध है? व्याख्या कीजिए। . (NCERT)

उत्तर- बजटीय घाटे को पूरा करने के लिए वित्तीय व्यवस्था या तो करारोपण अथवा ऋण अथवा नई मदा का निर्गमन करके की जाती है। कर और नई मुद्रा के निर्गमन की अपनी सीमाएँ हैं। अत: सरकार प्रायः ऋण-ग्रहण पर आश्रित रहती है, इसे सरकारी ऋण कहते हैं। सरकारी घाटे और सरकारी ऋण-ग्रहण के सम्बन्ध में निकट का सम्बन्ध पाया जाता है। घाटा एक प्रवाह है जिससे ऋण स्टॉक में वृद्धि होती है। यदि सरकार का ऋण-ग्रहण वर्ष-प्रतिवर्ष जारी रहता है, तो इससे ऋण का संचय होता जाता है और सरकार को इस ऋण पर ब्याज के रूप में अधिकाधिक भुगतान करना पड़ता है। इस ब्याज अदायगी के लिए भी कभी-कभी ऋण लेना पड़ता है। इस पर ऋण की मात्रा और मूल मात्रा पर ब्याज बढ़ता जाता है और घाटे को भी बढ़ाता जाता है।

प्रश्न 186. एक विकासशील देश में राजकोषीय नीति की भूमिका की विवेचना कीजिए। 2020

उत्तर- विकासशील देश में सुसुप्त संसाधनों को जो क्रियाशील नहीं हैं, सक्रिय करने वाली राजकोषीय नीति को डॉ० बलजीत सिंह ने सक्रिय राजकोषीय नीति एवं प्रो० गौतम माथुर ने ऐक्चुएटिंग राजकोषीय नीति कहा। पर एक 'आयोजन मिश्रित अर्थव्यवस्था में जिसमें सार्वजनिक उद्यम तथा राज्य की विकासात्मक भूमिका पर बल मिलता है, राजकोषीय नीति की भूमिका अधिक प्रभावपूर्ण हो जाती है। वह एक ओर सार्वजनिक क्षेत्र के लिए संसाधनों को जुटाने का कार्य करती है तो दूसरी ओर यह भी देखती है कि निजी क्षेत्र के लिए भी संसाधन उपलब्ध हों।

आयोजन मिश्रित उदारीकृत व्यवस्था में जैसी व्यवस्था आजकल भारत में चल रही है, राजकोषीय नीति की . भूमिका उतनी सक्रिय एवं विकासपरक नहीं रह जाती जितनी बाजार मिश्रित नियोजित व्यवस्था में होती है। वास्तविकता तो यह है कि जितनी ही बाजार की भूमिका बढ़गी, जितनी ही अर्थव्यवस्था अहस्तक्षेप नीति के पास पहुँचेगी, सरकार एवं राजकोषीय नीति की भूमिका उतनी ही कम होती जायेगी और यहाँ तक कि यह शून्य या नगण्य हो जायेगी। राजकोषीय नीति इस प्रकार से निर्मित होती है कि संसाधनों की क्राउडिंग आउट (संसाधनों का सार्वजनिक क्षेत्र में लगाना जिससे निजी क्षेत्र के लिए उनकी कमी हो) न्यूनतम हो निजी क्षेत्र में घरेलू और विदेशी पूँजी प्रोत्साहित हो

पर अवस्थापना को विकसित करने और सामाजिक क्षेत्र के विकास में जिससे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो एवं गरीबी में कमी हो, राजकोषीय नीति की प्रबल भूमिका बनी रहती है।

प्रश्न 187. क्या सार्वजनिक ऋण बोझ बनता है? व्याख्या कीजिए। (NCERT)

उत्तर- राज्य द्वारा लिए गए ऋणों को सार्वजनिक ऋण कहा जाता है। सरकार ऋण अपने देश के नागरिकों (आन्तरिक ऋण) के अलावा अन्य देश की सरकारों/नागरिकों (विदेशी ऋण) से लेती है। जनता से लिए गए सार्वजनिक ऋण का घरेलू बचतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है अर्थात् इससे निजी क्षेत्र की बचतें कम हो जाती हैं। इससे पूँजी निर्माण की दर भी कम हो जाती है। दूसरे, आन्तरिक ऋणों की दशा में मूलधन तथा ब्याज का भुगतान करने के लिए सरकार कर लगाती है जिसके अर्थव्यवस्था पर दूषित प्रभाव पड़ते हैं। तीसरे, सार्वजनिक ऋण से प्राप्त धनराशि को वर्तमान पीढ़ी के कल्याण पर व्यय कर दिया जाता है किन्तु इसके चुकाने का भार भावी पीढ़ी को अन्तरित कर दिया जाता है। इस प्रकार वर्तमान ऋण भावी पीढ़ी के लिए बोझ बन जाता है। इसके अलावा, विदेशी ऋणों का बोझ आन्तरिक ऋणों की तुलना में अधिक होता है क्योकि इनके भुगतान के लिए विदेशी विनिमय साधनों को ऋणी देश से ऋणदाता देश को हस्तान्तरित करना होता है।

प्रश्न 188. निरपेक्ष मूल्य में कर गुणक सरकारी व्यय गुणक से छोटा क्यों होता है? व्याख्या कीजिए। (NCERT,2020)

उत्तर- सरकार के व्यय गुणक की तुलना में कर गुणक का निरपेक्ष मूल्य अपेक्षाकृत अल्प (कम) होता है, क्योंकि सरकारी व्यय में वृद्धि से कुल व्यय पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है जबकि गुणक प्रक्रिया में करों का प्रवेश प्रयोज्य आय पर उनके प्रभाव के माध्यम से होता है जिसका कि परिवार के उपभोग (जो कल व्यय का अंश है) पर प्रभाव पड़ता है। अत: करों में ΔT की कटौती से उपभोग और इस प्रकार कल व्यय में पहले $c\Delta T$ की व्रद्धी होती है।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण--- माना सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) = 0.8 है, तब सरकारी व्यय का गुणक $\frac{1}{1-c} = \frac{1}{1-18} = \frac{1}{0.2} = 5$ होता है। सरकारी व्यय में 100 की वृद्धि के लिए सन्तुलन आय में $500\left(\frac{1}{1-c}\Delta G = 5 \times 100\right)$की वृद्धि होगी। कर गुणांक $\frac{-c}{1-c} = \frac{-0.8}{1-0.8} = \frac{-0.8}{0.2} - 4$ है।

$100(\Delta T = -100$ की कर कटौती से सन्तुलन आय में $400\left(\frac{-c}{1-c}\Delta T = -4 \times -100\right)$की वृद्धि होगी। अत: इस स्थिति में सन्तुलन आय में वृद्धिG के अन्तर्गत होने वाली वृद्धि के परिणामस्वरूप हुई वृद्धि से कम होती है।

प्रश्न 189. मान लीजिए कि सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति 0.75 है और आनुपातिक आय कर 20 प्रतिशत है। सन्तुलन आय में निम्नलिखित परिवर्तनों को ज्ञात करें-(a) सरकार के क्रय में 20 की वृद्धि, (b) अन्तरण में 20 की कमी। (NCERT)

उत्तर–

— (a) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति 0.75 होने पर सरकारी व्यय गुणक

$$\left(\frac{\Delta Y}{\Delta G}\right) = \frac{1}{1-0.75} = \frac{1}{0.25} = \frac{100}{25} = 4$$

सरकारी व्यय में वृद्धि = 20% तथा संतुलन में वृद्धि = ?

सरकारी व्यय गुणक $= \frac{\Delta y}{\Delta G} \Rightarrow 4 = \frac{\Delta y}{20} \Rightarrow \Delta y = 4 \times 20 = 00$

अत: सरकार के क्रय में 20% की वृद्धि होने पर संतुलन आय में 80% की वृद्धि होगी।

(b) अंतरण गुणक $= \frac{0.75}{1-0.75} = \frac{0.75}{0.25} = 3$

अंतरण गुणक $= \frac{\Delta y}{\Delta TR} \Rightarrow 3 = \frac{\Delta y}{-20} \Rightarrow \Delta y = -60$

अत: अन्तरण में 20 की कमी होने पर सन्तुलन आय में 60% की कमी होगी।

प्रश्न 190. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति किसे कहते हैं? यह किस प्रकार सीमान्त बचत प्रवृत्ति से सम्बन्धित है? (NCERT)

अथवा

उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति क्या होती है? 2020

अथवा

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति क्या होती है? (2020)

अथवा

सीमान्त बचत प्रवृत्ति का अर्थ लिखिए। 2020

उत्तर- सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC)-आय के परिवर्तन के कारण उपभोग में परिवर्तन के अनपात को सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) कहते हैं। यह बढ़ी हुई आय का वह भाग है जो उपभोग पर खर्च किया जाता है। उपभोग में परिवर्तन (ΔC) को आय में परिवर्तन (ΔY) से भाग करके MPC को ज्ञात किया जाता है, अर्थात्

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

यहाँ ΔC = उपभोग में परिवर्तन, ΔY = आय में परिवर्तन।

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) के मान निम्नवत् हैं---

1. आय में वृद्धि होने पर, उपभोक्ता उपभोग में बिल्कुल भी वृद्धि नहीं करेगा अर्थात् MPC = 0.

2. आय में वृद्धि होने पर, आय में होने वाली सारी वृद्धि को उपभोग पर खर्च कर देगा अर्थात्

MPC = 1

3. आय में वृद्धि होने पर, आय में परिवर्तन के एक भाग से उपभोग में परिवर्तन करेगा अर्थात्

O <MPC < 1

सामाजपचत प्रति (MPS)---- आय में परिवर्तन के कारण बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) कहते हैं। यह उस बढ़ी हुई आय का वह भाग या अनुपात है जो बढ़ी हुई आय से बचाई गई है। बचत में परिवर्तन (ΔS) को आय में परिवर्तन (ΔY) से भाग करके MPS को ज्ञात किया जा सकता है, अर्थात्

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

यहाँ, ΔS = बचत में परिवर्तन, ΔY = आय में परिवर्तन। सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति और सीमान्त बचत प्रवृत्ति का योग (1) इकाई के बराबर होता है। इस प्रकार, सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति + सीमान्त बचत प्रवृत्ति = 1 अर्थात्

MPC + MPS =1

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि

$$\frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y} = \frac{\Delta Y}{\Delta Y} = 1$$

प्रश्न 191. क्या सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) तथा सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) कभी ऋणात्मक हो . सकती हैं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर- नहीं, न तो सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS) और न ही सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) कभी ऋणात्मक हो सकती हैं क्योंकि MPS अतिरिक्त बचत (ΔS) तथा अतिरिक्त आय (ΔY) के बीच का

अनुपात है। इसी तरह MPC अतिरिक्त उपभोग (ΔC) तथा अतिरिक्त आय (ΔY) के बीच का अनुपात है। अनुपात ΔS/ΔY, S-फलन के ढलान को व्यक्त करता है जो सदैव धनात्मक होता है (क्योकि S और Y के बीच धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है)। इसी तरह ΔC/ΔY भी C- फलन के ढलान को व्यक्त करता है जो सदैव धनात्मक होता है (क्योकि C और Y के बीच धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है।)

प्रश्न 192. दिखाइए कि (i) APC + APS = 1 तथा (ii) MPC + MPS = 1.

उत्तर— (i) हम जानते हैं कि, $APC = \frac{C}{Y}$ और $APS = \frac{S}{Y}$

तथा $Y = C + S$

इसलिए, $APC + APS = \frac{C}{Y} + \frac{S}{Y} = \frac{C+S}{Y} = \frac{Y}{Y} = 1$

या, $\boldsymbol{APC + APS = 1}$

(ii) हम जानते हैं कि, $MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$ और $MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$

तथा $\Delta Y = \Delta C + \Delta S$

इसलिए, $MPC + MPS = \frac{\Delta C}{\Delta Y} + \frac{\Delta S}{\Delta Y} = \frac{\Delta C + \Delta S}{\Delta Y} = \frac{\Delta Y}{\Delta Y} = 1$

या, $\boldsymbol{MPC + MPS = 1}$

प्रश्न 193. न्यून माँग की स्थिति और अत्यधिक माँग की स्थिति को समझाइए।

उत्तर- पूर्ण रोजगार आय स्तर, आय का वह स्तर है जहाँ उत्पादन के समस्त कारक, उत्पादन प्रक्रिया में पूर्णतया रोजगार में हैं। स्मरणीय है कि Y की AD को समानता के बिन्दु पर प्राप्त साम्य, संसाधनों के पूर्ण रोजगार का द्योतक नहीं है। साम्य का मात्र अर्थ यह है कि यदि इसको यूँ ही छोड़ दिया जाए. तो अर्थव्यवस्था में आय का स्तर नहीं बदलेगा. यद्यपि अर्थव्यवस्था में रोजगार उपलब्ध है। निर्गत का साम्य स्तर. आगत के पूण राजगार के स्तर से अधिक या कम हो सकता है। यदि यह आगत के पूर्ण रोजगार स्तर से कम है, तो यह इसलिए है कि मांग समस्त साधनों को रोजगार देने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह स्थिति न्यून माँग की स्थिति कहलाती है। इससे दीर्घकाल में कीमतें कम हो जाती हैं। दूसरी तरफ, यदि आगत का रोजगार स्तर, पूर्ण रोजगार के स्तर से अधिक है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि माँग, पूर्ण रोजगार पर उत्पादित उत्पादन स्तर से अधिक है। यह स्थिति अत्यधिक माँग की स्थिति कहलाती है। इससे दीर्घकाल में कीमतें बढ़ जाती हैं।

प्रश्न 194. प्रत्याशित निवेश और यथार्थ निवेश में क्या अन्तर है? (NCERT)

उत्तर-- प्रत्याशित निवेश और यथार्थ निवेश में अन्तर

क्र.सं.	प्रत्याशित निवेश	यथार्थ निवेश
1	यह निवेश के वांछित स्तर को व्यक्त करता है।	यह निवेश के प्राप्त स्तर को व्यक्त करता है।
2	एक लेखा वर्ष के दौरान प्रत्याशित निवेश प्रत्याशित बचत के बराबर हो भी सकता है और नहीं भी।	एक लेखा वर्ष के दौरान निवेश सदा यथार्थ बचत के बराबर होता है।
3	आय का सन्तुलन स्तर वहाँ निर्धारित होता है जहाँ प्रत्याशित निवेश = प्रत्याशित बचत।	यथार्थ निवेश आय के सन्तुलन स्तर के निर्धारण में कोई उपयुक्तता नहीं रखता।

प्रश्न 195. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए---

आय	उपभोग	सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति	औसत बचत प्रवृत्ति
0	40		
---	120	0.8	---
---	200	0.8	---
---	280	0.8	---

उतर---

आय (Y)	उपभोग (C)	सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC)	बचत (S) = Y − C	औसत बचत प्रवृत्ति (APS) = S/Y
0	40	—	−40	—
100	120	0.8	−20	$\frac{-20}{100} = -0.2$
200	200	0.8	0	$\frac{0}{200} = 0$
300	280	0.8	20	$\frac{20}{300} = 0.06$

प्रश्न 196. यदि राष्ट्रीय आय ₹ 80 करोड़ हो और उपभोग व्यय ₹ 64 करोड़ हो. तो औसत बचत प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए। जब आय बढ़कर ₹ 100 करोड़ हो जाए और उपभोग व्यय ₹ 78 करोड़ हो जाए, तो औसत उपभोग प्रवृत्ति और सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कितनी होगी?

उतर---- दिया है, राष्ट्रीय आय (Y) = ₹ 80 करोड़

उपभोग व्यय (C)= ₹ 64 करोड़

बचत (S) = Y - C = ₹ 80 करोड़ - ₹ 64 करोड़ = ₹ 16 करोड़ .

औसत बचत प्रवृत्ति (APS) = $\frac{S}{Y} = \frac{16}{80} = 0.2$

आय में वृद्धि (Y_1) =₹ 100 करोड़

आय में परिवर्तन (ΔY) = ₹ 100 करोड़ - ₹ 80 करोड़ = ₹ 20 करोड़

उपभोग व्यय में वृद्धि (C_1) = ₹ 78 करोड़

उपभोग व्यय में परिवर्तन (ΔC) = ₹ 78 करोड़ - ₹ 64 करोड़ = ₹ 14 करोड़

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) = $\frac{C_1}{Y_1} = \frac{78}{100} = 0.78$

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) $\frac{\Delta C}{\Delta Y} = \frac{14}{20} = 0.7$

औसत बचत प्रवृत्ति (APS) = 0.2

औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) = 0.787

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) = 0.7

प्रश्न 197. एक अर्थव्यवस्था सन्तुलन में है। इसका उपभोग फलन C = 300 + 0.8 Y है जिसमें Cउपभोग व्यय और Y आय है और निवेश ₹ 700 है। राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए।

उतर--- दिया है, उपभोग व्यय (C) = 300 + 0.8Y,

निवेश (I) = 700

सन्तुलन पर, Y =C + I

Y = 300+ 0.8Y + 700

Y = 1,000 + 0.8Y

Y - 0.8Y = 1,000

0.2Y = 1,000

Y = 5,000

राष्ट्रीय आय () = ₹ 5,000.

प्रश्न 198. एक अर्थव्यवस्था सन्तुलन में है। अर्थव्यवस्था का उपभोग फलन C = 100 + 0.51 है जिसमें C उपभोग व्यय है और Y राष्ट्रीय आय है। राष्ट्रीय आय 1,000 है। अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय ज्ञात कीजिए।

उतर--- दिया है, उपभोग व्यय (C) = 100 + 0.5Y

राष्ट्रीय आय (Y) = 1,000

सन्तुलन पर, Y =C + L अथवा I = y - c

= 1,000 - 100 - 0.5y = 1,000 - 100 - 0.5 (1,000)

= 1,000 - 100 - 500 = 400

अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय (1)= 400

प्रश्न 199. एक अर्थव्यवस्था सन्तुलन में है। इसकी राष्ट्रीय आय ₹ 5,000 है और स्वतन्त्र उपभोग व्यय ₹500 है। यदि सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति 0.7 हो, तो कुल उपभोग व्यय कितना होगा?

उतर---- दिया है, राष्ट्रीय आय (Y) = ₹ 5,000

स्वतन्त्र उपभोग व्यय ($\bar{C}$)= ₹ 500

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC)= 0.7

उपभोग व्यय (C)= $\bar{C}$ + MPC (Y)

= 500 + 0.7 (5,000) = 500 + 3,500 = 4,000

कुल उपभोग व्यय (C) = ₹ 4,000

प्रश्न--200. एक अर्थव्यवस्था में उपभोग फलन C = 400 + 0.75Y है, जिसमें C उपभोग व्यय और Y राष्ट्रीय आय है और निवेश व्यय 2,000 है। राष्ट्रीय आय के सन्तुलन स्तर और उपभोग व्यय का परिकलन कीजिए।

उतर---- दिया है, C = 400 + 0.75Y

निवेश व्यय =2,000

सन्तुलन पर, $Y = C + I$

$Y = 400 + 0.75Y + 2,000$

$Y = 2,400 + 0.75Y$

$Y - 0.75Y = 2,400 \quad \Rightarrow \quad 0.25Y = 2,400$

$Y = 9,600$

$C = 400 + 0.75Y = 400 + 0.75\ (9,600) = 400 + 7,200$

$= 7,600$

राष्ट्रीय आय का सन्तुलन स्तर =9,600

उपभोग व्यय =7,600.

प्रश्न 201. "किसी रेखा में पैरामेट्रिक शिफ्ट" से क्या समझते हैं? रेखा में किस प्रकार शिफ्ट होता है जब से इसकी (i) ढाल घटती है और (ii) इसके अन्तःखण्ड में वृद्धि होती है? (NCERT)

उत्तर- जब दो सरल रेखाएँ जो एक-दूसरे की अपेक्षा अधिक ढाल वाली होती हैं और आलेख के पैरामीटरों ε और m के मूल्यों के घटने-बढ़ने से परिवर्तित होती हैं तो यह स्थिति सरल रेखा में 'पैरामेट्रिक शिफ्ट' कहलाती है।

(i) सरल रेखीय समीकरण $b = ma + \varepsilon$ को प्रदर्शित करने वाले आलेख पर क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर पक्षों पर a, b दो परिवर्तों को आगे दर्शाया गया है।

यहाँ, $m > 0 \Rightarrow$ सरल रेखा की प्रवणता (ढाल)

$\varepsilon > 0 =$ ऊर्ध्वाधर, b अक्ष पर अन्त:खण्ड

जब a में वृद्धि होती है तो b के मूल्य में m इकाइयों की वृद्धि होती है। इसे आलेख पर 'परिवर्तों का संचलन' कहते हैं। माना m के दो मूल्य 0.5 एवं 1 हैं।

m के इन मूल्यों को दो सरल रेखाओं पर दर्शाते हैं, जिनमें एक-दूसरे की अपेक्षा अधिक खड़े ढाल वाला है।

जैसे-जैसे m में वृद्धि होती है, सरल रेखा ऊपर की ओर बढ़ती है (नीचे दिया गया रेखाचित्र a) तथा ढाल के घटने पर सरल रेखा नीचे की ओर बढ़ती (ऋणात्मक शिफ्ट) है (रेखाचित्र b)

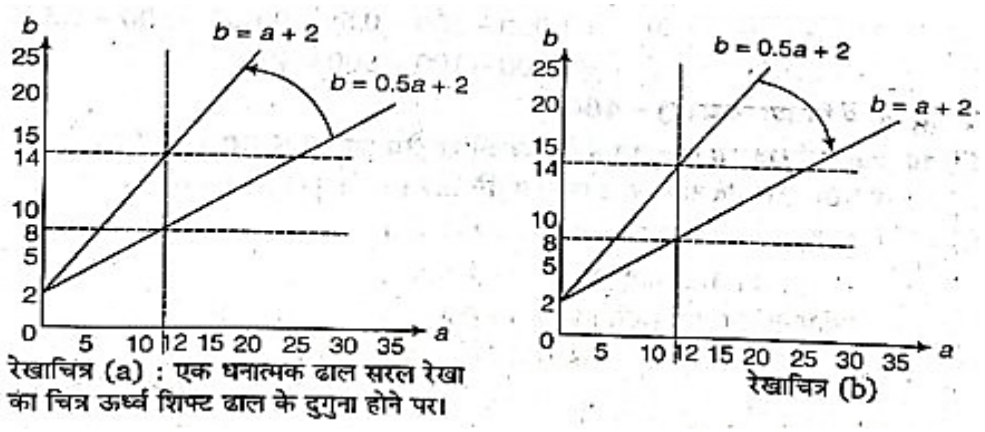

रेखाचित्र (a) : एक धनात्मक ढाल सरल रेखा का चित्र ऊर्ध्व शिफ्ट ढाल के दुगुना होने पर।

रेखाचित्र (b)

(ii) सरल रेखा का दूसरा पैरामीटर ε है। इस रेखा पर पैरामेट्रिक शिफ्ट के दूसरे प्रकार का प्रेक्षण कर सकते हैं। m के मूल्य को 0.5 पर स्थिर मानकर ε के अन्त:खण्ड 2 से 3 तक वृद्धि करनी होगी। अब सरल रेखा ऊपर की ओर समान्तर रूप से शिफ्ट होगी (रेखाचित्र c)।

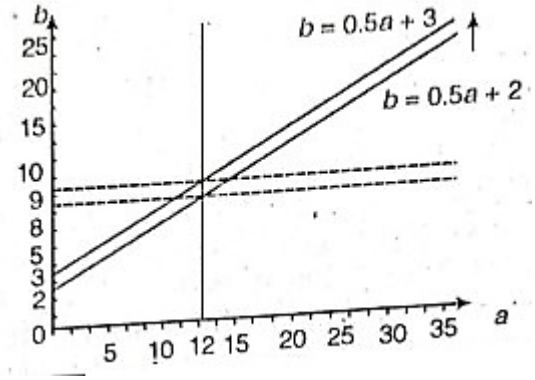

रेखाचित्र (c): एक धनात्मक ढाल सरल रेखा का चित्र ऊर्ध्व समानान्तर शिफ्ट अन्त:खण्ड के बढ़ने पर।

प्रश्न 202. अदायगी सन्तुलन लेखा क्या दिखाता है? भुगतान सन्तुलन लेखा के दो भागों के नाम बताइए।

उत्तर- अदायगी (भुगतान) सन्तुलन एक देश के शेष विश्व के साथ एक निश्चित अवधि के बीच किए गए सभी आर्थिक लेन-देनों का लेखा-ब्यौरा होता है। प्रत्येक देश, विश्व के अन्य देशों के साथ आर्थिक लेन-देन करता है। ऐसे लेन-देनों के फलस्वरूप, यह अन्य देशों से भुगतान लेता है तथा उन्हें भुगतान करता है। अदायगी सन्तुलन इन प्राप्तियों तथा भुगतानों का एक लेखा-ब्यौरा होता है।

अदायगी सन्तुलन लेखे के दो भाग इस प्रकार हैं-(1) चालू खाता तथा (2) पूँजी खाता।

प्रश्न 203. अदायगी सन्तुलन खाते के चालू खाते के घटक बताइए। उत्तर- अदायगी सन्तुलन (भुगतान शेष) के चालू खाते की दो प्रमुख मदें (घटक) निम्नलिखित हैं

1. तैयार वस्तुएँ (दृश्य मदें)--- इनसे अभिप्राय निर्यात व आयात की उन मदों से है जो प्रकृति में भौतिक रूप से विद्यमान होती हैं और इसलिए इन्हें दृश्य मदें कहा जाता है। निर्यात तथा आयात मदों को प्रकट करने वाले चालू खातों को व्यापार शेष खाता कहा जाता है।

2. अदृश्य मदें--- इनसे अभिप्राय निर्यात व आयात की उन मदों से है जो अभौतिक होती हैं और इसलिए इन्हें अदृश्य मदें कहा जाता है। भारत के भुगतान शेष में निम्नलिखित उप-मदें अदृश्य मदों में शामिल की जाती हैं—

(i) गैर-कारक सेवाएँ---- इसमें जहाजरानी, बैंकिंग तथा बीमा जैसी सेवाओं के रूप में किए गए भगतान शामिल हैं। जो सेवाएँ शेष विश्व को दी जाती हैं, उन्हें निर्यात माना जाता है और जो सेवाएँ शेष विश्व से प्राप्त होती हैं, उन्हें आयात माना जाता है।

(ii) आय---- इससे अभिप्राय आय [निवेश आय + कर्मचारियों का पारिश्रमिक] के रूप में किए जाने वाले भुगतान से हे जो कारक सेवाओं के रूप में किए जाते हैं। हमारे देश द्वारा शेष विश्व से अर्जित आय भुगतान शेष के चालू खाते में प्राप्ति के रूप में दिखाई जाती है और शेष विश्व द्वारा हमारे देश से अर्जित आय को देनदारी के रूप में दिखाया जाता है।

(iii) चाल हस्तांतरण--- इनसे अभिप्राय उपहार, अनुदान एवं कर्मचारियों द्वारा भेजी गई राशि (विदेशों में बसे निवासियों द्वारा घरेलू अर्थव्यवस्था में अपने रिश्तेदारों को मुद्रा भेजना) के रूप में एक-पक्षीय अन्तरण (Unilateral Transfers) से हैं।

प्रश्न 204. अदायगी सन्तुलन के पूँजीगत खाते के घटक बताइए। अथवा भुगतान सन्तुलन के पूँजी खाते का वर्णन कीजिए। (2020)

उत्तर- अदायगी (भुगतान) सन्तुलन का पूजी खाता पंजी खाता ऐसे लेन-देनों के कारण होने वाली प्राप्तियों तथा भुगतानों का रिकार्ड रखता है जिसके कारण शेष विश्व की तुलना में एक देश की परिसंपत्ति-देयता की स्थिति प्रभावित होती है। देश की देयताएँ या परिसंपत्तियाँ (शेष विश्व की तुलना में) या तो बढ़ती हैं या घटती हैं। अन्य शब्दों में, पूँजी खाते के लेन-देनों के कारण भावी दावे उत्पन्न होते हैं।

कभी-कभी प्लांट एवं मशीनरी जैसी पूँजीगत वस्तुओं के निर्यात एवं आयात के संबंध में भ्रांति उत्पन्न होती है। क्या इन लेन-देनों को पूँजी खाते में शामिल किया जाना चाहिए? इसका उत्तर है 'नहीं। आइए इसे पूर्णतया स्पष्ट करें कि सभी प्रकार की वस्तुओं (उपभोक्ता वस्तुओं या पूँजीगत वस्तुओं) के

निर्यात तथा आयात को भुगतान शेष के चालू खाते में तैयार वस्तुओं' या 'दश्य मदों के व्यापार' के रूप में रिकॉर्ड किया जाता है। अतः पूँजीगत वस्तुओं के निर्यात तथा आयात का भुगतान शेष के पूँजी खाते के साथ कोई लेना-देना नहीं है।

अदायगी (भुगतान) सन्तुलन के पूँजी खाते के घटक

अदायगी सन्तुलन (भुगतान शेष) के पूँजी खाते की मुख्य मदें (घटक) निम्नलिखित हैं--

1. उधार--- इसमें बाहरी वाणिज्यिक उधार तथा बाहरी सहायता शामिल हैं। भारत के भुगतान शेष खाते में बाहरी सहायता को शुद्ध प्राप्तियों के रूप में लिखा जाता है जबकि वाणिज्यिक उधार को 'शुद्ध' उधार के रूप में लिखा जाता है।

2. विदेशी निवेश--- इसमें FDI (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) तथा पोर्टफोलियो निवेश शामिल हैं। हमारे निवासियों द्वारा शेष विश्व में किए गए निवेश को 'नाम पक्ष' के अन्तर्गत लिखा जाता है जबकि गैर-निवासियों द्वारा हमारे देश में किए गए निवेश को भुगतान शेष के चालू खाते के अन्तर्गत 'जमा पक्ष' में लिखा जाता है।

3. NRI जमाएँ--- अनिवासी जमाओं से अभिप्राय अनिवासी भारतीयों द्वारा शेष विश्व से किए गए कोषों के हस्तांतरण से है। इन हस्तांतरणों के शुद्ध मूल्य को लिखा जाता है जिसका अनुमान NRI जमाओं तथा NRI प्राप्तियों के अन्तर द्वारा लगाया जाता है।

4. बैंकिंग पूंजी--- इससे अभिप्राय है-वाणिज्यिक बैंकों द्वारा विदेशी परिसम्पत्तियों को रखना। वाणिज्यिक बैंकों द्वारा विदेशी परिसम्पत्तियों को निकालने के कारण, अर्थव्यवस्था में बैंकिंग-पूँजी अन्तर्वाह में वृद्धि होती है।

5. अल्पकालीन व्यापार जमा---- अल्पकालीन व्यापार जमा के कारण विदेशी विनिमय के प्रवाह को भुगतान शेष के पूँजी खाते में 'नाम पक्ष की ओर रिकॉर्ड किया जाता है।

6--- इन सेवाओं के कारण विदेशी विनिमय के प्रवाह को भुगतान शेष के पूँजी खाते में 'नाम पक्ष की ओर रिकॉर्ड किया जाता है।

प्रश्न 205. अदायगी सन्तुलन में स्वायत्त और समंजन लेन-देनों के बीच अन्तर बताइए।

उत्तर- अदायगी सन्तुलन की स्वायत्त (स्वतन्त्र) तथा समंजन (समायोजक) मदों में मूल अन्तर इस प्रकार हैं

1. अदायगी सन्तुलन के घाटे या बचत का कारण स्वायत्त मदें (आर्थिक उद्देश्यों द्वारा निर्धारित) होती हैं जबकि समायोजक मदों का उद्देश्य अदायगी सन्तुलन की समानता को बनाए रखना है। समायोजक मदों के कारण ही भुगतान सन्तुलन सदा सन्तुलन में बना रहता है।

2. स्वायत्त मदों को प्रायः रखा के ऊपर की मदें' कहा जाता है जबकि समायोजक मदों को प्रायः रखा के नीचे की मदें कहा जाता है।

प्रश्न 206. अदायगी सन्तुलन में घाटे का अर्थ समझाइए।

उत्तर- जब किसी देश के भुगतान (Debit) उसकी प्राप्तियों (Credit) से अधिक होती है, तब इसे अदायगी (भुगतान) सन्तुलन (शेष) में घाटा कहा जाता है, अर्थात्

$$BU = R < P$$

(यहाँ, BU = प्रतिकूल भुगतान शेष; R = प्राप्तियाँ P = भुगतान।)

जब किसी देश के आयात उसके निर्यातों से अधिक होते हैं (जिसमें व्यापार की दृश्य तथा अदृश्य दोनों मदें शामिल हैं), इसे अदायगी सन्तुलन के चालू खाते पर घाटा कहा जाता है। भारत जैसे देशों में यह घाटा अकसर विदेशों से ऋण लेकर पूरा किया जाता है। यह नोट करना महत्त्वपूर्ण है कि विदेश से लिया गया ऋण अदायगी सन्तुलन के पूँजी खाते में प्राप्तियों के रूप में दिखाया जाता है। ऐसी प्राप्तियों के फलस्वरूप भुगतान सन्तुलन का पूँजी खाता आधिक्य प्रकट कर सकता है। परन्तु यदि यह आधिक्य (Surplus) अदायगा सन्तुलन के चालू खाते में घाटे को दर्शाता है तब यह भगतान शेष में घाटे की वास्तविक स्थिति है, बेशक अदायगी सन्तुलन को सन्तुलन की अवस्था में दिखाया गया हो।

प्रश्न 207. सन्तुलित व्यापार शेष और चालू खाता सन्तुलन में अन्तर स्पष्ट कीजिष्ट! (NCERT)

उत्तर- एक देश के कुल निर्यात तथा कल आयात के मल्य का अन्तर व्यापार शेष कहलाता है। इसमें कवल दृश्य मदों (वस्तुओं) के निर्यात एवं आयात का मल्य शामिल होता है। जब वस्तुओं के निर्यात और आयात का मूल्य बराबर होता है, तो यह सन्तुलित व्यापार शेष कहलाता है, अर्थात्

सन्तुलित व्यापार शेष = निर्यात मूल्य = आयात मूल्य

इसके विपरीत भगतान शेष का चाल खाता अल्पकालीन वास्तविक सौदों को दर्शाता है। व्यापार शेष में

अदृश्य मदें (सेवाएँ) तथा शुद्ध अन्तरण जोड़ देने से चालू खाता शेष प्राप्त होता है, अर्थात्

चालू खाता शेष = व्यापार शेष + अदृश्य व्यापार + एकपक्षीय अन्तरण शेष

प्रश्न 208. आधिकारिक आरक्षित निधि का लेन-देन क्या है? अदायगी सन्तुलन में इसके महत्त्व का वर्णन कीजिए।

(NCERT)

उत्तर- आधिकारिक आरक्षित निधि लेन-देन में विदेशी विनिमय बाजार में विदेशी मुद्रा का विक्रय तथा अपने विदेशी विनिमय में परिवर्तन करना शामिल होता है। आधिकारिक आरक्षित निधि में कमी कुल अदायगी घाटे को दर्शाता है जबकि आधिकारिक आरक्षित निधि में वृद्धि कुल अदायगी आधिक्य को दर्शाता है। अदायगी सन्तुलन में किसी एक देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसम्पतियों के लेन-देन का विवरण दर्ज होता है। अतः अदायगी सन्तुलन मुख्य रूप से आधिकारिक आरक्षित निधि पर निर्भर करता है।

प्रश्न 209. क्या चालू पूँजीगत घाटा खतरे का संकेत होगा? व्याख्या कीजिए। (NCERT)

उत्तर- बन्द अर्थव्यवस्था में बचत और निवेश हमेशा एकसमान रहते हैं जबकि खुली अर्थव्यवस्था में इनमें अन्तर पाया जाता है। जब किसी देश में व्यापार घाटा होता है तो बचत में कमी हो रही होती है तथा निवेश में वृद्धि होती है अर्थात् चालू पूँजीगत घाटा बढ़ रहा होता है। देश के दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य के बारे में खतरे का संकेत तब होता है जब इस घाटे से बचत कम होती है और बजटीय घाटा अधिक होता है। परन्तु यदि इस घाटे से निवेश में वृद्धि प्रतिबिम्बित हो तो यह खतरे का संकेत नहीं होगा।

प्रश्न 210. विदेशी मुद्रा की कीमत और उसकी माँग के बीच विपरीत सम्बन्ध होने के कारण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- विदेशी मुद्रा की कीमत तथा उसकी माँग के बीच विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। इस विपरीत सम्बन्ध के निम्नलिखित कारण हैं---

1. जब विदेशी विनिमय (माना US डॉलर) घरेलू मुद्रा के रूप में सस्ती हो जाती है, तब हमें अपनी मुद्रा की प्रति इकाई के बदले अधिक डॉलर प्राप्त होते हैं। फलस्वरूप, आयात लाभप्रद बन जाते हैं तथा विदेशी विनिमय की माँग बढ़ जाती है।

2. जब विदेशी विनिमय सस्ती हो जाती है और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में घरेलू मुद्रा की क्रय-शक्ति बढ़ जाती है, तब घरेलू निवेशक शेष विश्व में पहले से अधिक निवेश करने के लिए प्रेरित होते हैं। तदनुसार विदेशी विनिमय की माँग बढ़ती है।

3. जब विदेशी विनिमय सस्ती हो जाती है तब भारतीयों के लिए विदेशी यात्रा भी सस्ती हो जाती है। - इस कारण भी विदेशी विनिमय की माँग बढ़ती है। जब विदेशी विनिमय महँगी होती है तो ठीक इसके विपरीत होता है।

प्रश्न 211. मौद्रिक विनिमय दर और वास्तविक विनिमय दर में भेद कीजिए। यदि आपको घरेलू वस्तु अथवा विदेशी वस्तुओं के बीच किसी को खरीदने का निर्णय करना हो, तो कौन-सी दर अधिक प्रासंगिक होगी? (NCERT)

उत्तर- मौद्रिक विनिमय दर वह विनिमय दर है जिसमें एक करेंसी की अन्य करेंसियों के सम्बन्ध में औसत शक्ति को मापते समय कीमत स्तर में होने वाले परिवर्तनों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। वास्तविक विनिमय दर वह विनिमय दर है जिसमें विश्व के विभिन्न देशों के कीमत स्तरों में होने वाले परिवर्तन को ध्यान में रखा जाता है।

वास्तविक विनिमय दर $= \frac{eP}{p}$

जहाँ, P = देश का कीमत स्तर, P = विदेशी कीमत स्तर, e = विदेशी कीमत (रुपये में)

वास्तविक विनिमय दर से वस्तुओं की घरेलू कीमत की तुलना में विदेशी वस्तुओं की कीमत का पता चल जाता है। यदि वास्तविक विनिमय दर 1 है तो करेंसी की क्रयशक्ति समता में है। यदि वास्तविक विनिमय दर 1 से अधिक है तो अपने देश की तुलना में विदेशी वस्तुएँ महँगी होंगी। अतः स्पष्ट है कि घरेलू वस्तु अथवा विदेशी वस्तुओं के बीच किसी को खरीदने का निर्णय करने में वास्तविक विनिमय दर अधिक प्रासंगिक होगी।

प्रश्न 212. 'विदेशी विनिमय दर' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (2020)

उत्तर- व्यापक अर्थ से विदेशी विनिमय से हमारा आशय उस सम्पूर्ण व्यवस्था से होता है, जिसके द्वारा दो देश अपने अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों का भुगतान करते हैं अथवा जिसकी सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा विनिमय कार्य सम्पादित किया जाता है। अतएव इसके अन्तर्गत विदेशी भुगतान से सम्बद्ध सभी समस्याएँ आ जाती हैं। प्रो० हार्टले विदर्स की दृष्टि से 'विदेशी विनिमय अन्तर्राष्ट्रीय

मुद्रा विनिमय का विज्ञान एवं कला है।' विज्ञान के रूप में इसका सम्बन्ध उस विनिमय दर से होता है, जिस पर देश की मुद्रा को अन्य देश की मुद्रा में बदला जाता है।

डिलबर्ट ए० स्नाइडर के अनुसार---- "जिन साधनों का उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान में किया जाता है, उसको विदेशी विनिमय कहते हैं।"

चैपमैन के अनुसार, "विदेशी विनिमय वह यन्त्र है, जिसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भुगतान कार्य होते

संकुचित अर्थ में विदेशी विनिमय से आशय मुख्यत: तीन अर्थों में लिया जाता है-(i) कभी-कभी विदेशी विनिमय में हमारा अभिप्राय उन विदेशी विनिमय पत्रों एवं बैंक ड्राफ्टों आदि से होता है, जिनका प्रयोग भुगतानों के दायित्वों को निपटाने के लिए किया जाता है। (ii) कभी-कभी विदेशी विनिमय दर को भी विदेशी विनिमय के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। (iii) कभी-कभी यह उस समस्त व्यवस्था की ओर संकेत करती है, जिससे भुगतानों का दायित्व निपटाया जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि विदेशी विनिमय से आशय उन प्रपत्रों, रीतियों अथवा साधनों से होता है जिनके द्वारा विदेशी दायित्वों का भुगतान किया जाता है।

प्रश्न 213. यदि ₹1 की कीमत 1.25 येन है और जापान में कीमत स्तर 3 हो तथा भारत में 1.2 हो, तो भारत और जापान के बीच वास्तविक विनिमय दर की गणना कीजिए (जापानी वस्तु की कीमत भारतीय वस्तु के सन्दर्भ में) संकेत-रुपये में येन की कीमत के रूप में मौद्रिक विनिमय दर को पहले ज्ञात कीजिए। (NCERT)

उत्तर- भारत और जापान के बीच वास्तविक विनिमय दर $= \frac{eP}{p}$

यहाँ, P= भारत का कीमत स्तर

P = जापान का कीमत स्तर

e = विदेशी मुद्रा की कीमत रुपये में

∵ e = 1.25, P =3, P = 1.2

∴ वास्तविक विनिमय दर $= \frac{1.25 \times 3}{1.2} = \frac{3.75}{1.2} = 3.125$

भारत और जापान के बीच वास्तविक विनिमय दर = 3.125,

प्रश्न 214. उन विनिमय दर व्यवस्थाओं की चर्चा कीजिए जिन्हें कुछ देशों ने अपने बाह्य खातों में स्थापित लाने के लिए किया है? (NCERT)

उत्तर- वर्तमान में अनेक देशों में स्थिर विनिमय दर है। कुछ देशों ने अपनी मद्रा को डॉलर अधिकीलित किया है। जनवरी, 1999 में यूरोपीय मौद्रिक संघ के गठन से संघ के सदस्यों की मुद्राओं के बीच विनिमय दर स्थायी रूप से निर्धारित हुई और एक नई समान मुद्रा यूरो (Euro) को जारी किया गया। यरोपीय संघ के 28 में से 19 सदस्यों ने यरो को अपनाया है। कछ देशों ने अपना मुद्रा का फ्रासक फ्रक में अधिकीलित किया है। अन्य देशों ने मद्राओं के समह में अधिकीलित किया है। प्रायः छाट दश भी एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक सहभागी के सापेक्ष अपनी विनिमय दर निर्धारित करने का निर्णय लेते हैं। वर्ष 2000 में इक्वेडोर ने डॉलरीकरण की नई व्यवस्था अपनाई और घरेलू मुद्रा को छोड़कर संयुक्त राज्य के डॉलर को स्वीकार किया। समग्र रूप में अब अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था एक बहु-प्रणाली व्यवस्था बन गई है।

प्रश्न 215. अवमूल्यन और मूल्यहास में अन्तर स्पष्ट कीजिए। (NCERT)

उत्तर- मुद्रा के अवमूल्यन से आशय है-अपने देश की मुद्रा के बाह्य मूल्य को कम करना। इसमें एक देश की सरकार दूसरे देश की मुद्रा की तुलना में अपनी मुद्रा के मूल्य को जान-बूझकर घटा देती है अर्थात् मुद्रा की क्रयशक्ति में परिवर्तन करके, मुद्रा के बाह्य मूल्य में कमी कर देती है। इससे विदेशी मुद्रा के मूल्य में वृद्धि हो जाती है, आयातों की घरेलू कीमत बढ़ जाती है और निर्यातों की विदेशी कीमत गिर जाती है। इसके परिणामस्वरूप निर्यात प्रोत्साहित होते हैं, आयात हतोत्साहित होते हैं और इस प्रकार अदायगी (भुगतान) सन्तुलन में सुधार होता है। इसके विपरीत विदेशी मुद्रा की माँग व पूर्ति में परिवर्तन द्वारा विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा के मूल्य में कमी हो जाना मूल्यह्रास कहलाता है। माना विनिमय दर $1=₹45, यह साम्य की स्थिति है। यदि विनिमय दर $1=₹50 हो जाती है तो इसका अर्थ है कि डॉलर की तुलना में रुपये के मूल्य में ह्रास हुआ है।

प्रश्न 216. स्वचालित युक्ति की व्याख्या कीजिए जिसके द्वारा स्वर्णमान के अन्तर्गत अदायगी-सन्तुलन प्राप्त किया जाता था। (NCERT)

उत्तर- जब किसी देश में स्वर्णमान प्रचलित होता है तो उसका प्रामाणिक सिक्का या तो स्वर्ण का बना हुआ होता है अथवा उसका मूल्य स्वर्ण में घोषित होता है। इस प्रकार स्वर्ण के साथ मुद्रा का एक निश्चित और प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। उस देश में स्वर्ण के आयात-निर्यात पर भी कोई प्रतिबन्ध नहीं होता। ऐसे दो देशों में विनिमय दर का निर्धारण दो देशों की मुद्राओं में स्वर्ण की

वैधानिक मात्रा के आधार पर होता है। इसमें परिवर्तन स्वर्ण की मात्रा में वैधानिक परिवर्तन के बाद ही हो सकता है।

उदाहरण-माना अमेरिका व भारत स्वर्णमान पर हैं। अमेरिकी डॉलर की एक इकाई में 5 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण है। भारतीय रुपये की एर्क में 2.5 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण है। इन देशों की विनिमय दर इस प्रकार निर्धारित होगी

5 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण = अमेरिकी डॉलर की 1 इकाई

5 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण = भारतीय रुपये की 2 इकाई

अतः विनिमय दर = 1 डॉलर = 2 रुपये

यह दर स्थिर अथवा दीर्घकालीन विनिमय दर होती थी, यह एक स्वचालित व्यवस्था थी जिसमें परिवर्तन या तो आर्थिक शक्तियों के द्वारा होता था या सरकार के हस्तक्षेप द्वारा। इस मान के अन्तर्गत अदायगी सन्तुलन आधिक्यों अथवा घाटे में समायोजन विनिमय दर में परिवर्तन के माध्यम से नहीं हो सकता घाल त आर्थिक व्यवस्था के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता था।

प्रश्न 217. (a) जब एक विदेशी मुद्रा की कीमत गिर जाती है, तो उस विदेशी मुद्रा की माँग बढ जाती है। क्यों?

(b) जब एक विदेशी मुद्रा की कीमत गिर जाती है, तो उस विदेशी मुद्रा की पूर्ति भी गिर जाती है। क्यों?

उत्तर- (a) जब विदेशी करेंसी की कीमत गिरती है तो उसकी माँग बढ़ती है निम्नलिखित है---

1 अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय व्यापारी अब अधिक मात्रा में विदेशी करेंसी खरीदेंगे क्योंकि अब यह कम कीमत पर उपलब्ध है। अत: इसकी माँग बढ़ेगी।

2. अब आयात पहले की तुलना में सस्त हो जाते हैं। तदनुसार आयातों में वृद्धि की प्रवृत्ति पाई जाएगी जिसका निहितार्थ विदेशी करेंसी की माँग का बढ़ना है।

3. विदेशी यात्रा अब सस्ती हो जाती है। तदनुसार विदेशी करेंसी की मांग बढ़ेगी।

विदेशी करेंसी की कीमत के गिरने से इसकी पूर्ति में गिरावट आएगी। इसके कारण अग्रलिखित हैं---

1. विदेशी करेंसी के सम्बन्ध में अब घरेलू करेंसी महँगी हो जाएगी, तदनुसार, विदेशी निवेशक घरेलू अर्थव्यवस्था में कम मात्रा में निवेश करेंगे। इसका निहितार्थ होगा, विदेशी करेंसी की पूर्ति में गिरावट।

2. अब घरेलू निर्यात घट जाएँगे क्योंकि एक US डॉलर घरेलू बाजार में कम वस्तुएँ खरीद सकेगा। तदनुसार, विदेशी करेंसी की पूर्ति (अथवा अपनी अर्थव्यवस्था में विदेशी करेंसी का प्रवाह) घट जाएगी।

3. एक विदेशी करेंसी (US डॉलर) की कीमत के गिरने का अर्थ प्रति US डॉलर के बदले कम भारतीय रुपये हैं। तदनुसार, NRIs स्वदेश को कम हस्तान्तरण करेंगे। इसका अर्थ घरेलू अर्थव्यवस्था में विदेशी करेंसी के प्रवाह को घटाना है।

प्रश्न 218. स्थिर विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है?

अथवा

स्थिर विनिमय दर का निर्धारण सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- स्थिर विनिमय दर का निर्धारण बाजार में माँग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा नहीं होता है बल्कि यह सम्बन्धित देश की सरकार द्वारा आधिकारिक रूप में घोषित या निश्चित किया जाता है। ऐसी विनिमय दर का सम्बन्ध 1880-1914 के दौरानं पूर्ण स्वर्ण मुद्रामान प्रणाली से सम्बन्धित था। इस प्रणाली के अनुसार प्रत्येक मुद्रा का मूल्य स्वर्ण के रूप में निर्धारित होता है जिसके अनुसार दो मुद्राओं के स्वर्ण मूल्यों के बीच अनुपात को उन मुद्राओं के बीच विनिमय दर के रूप में निर्धारित कर दिया जाता था।.

उदाहरण-एक डॉलर का मूल्य = 20 ग्राम सोना

एक रुपये का मूल्य = 5 ग्राम सोना |

तब 1 डॉलर = $\frac{20}{5}$ = ₹4

प्रश्न 219. नम्य विनिमय दर व्यवस्था में विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है? (NCERT)

अथवा

तैरती विनिमय दर से आप क्या समझते हैं? [2020]

उत्तर- नम्य (लोचशील/तिरती/तैरती) विनिमय दर को स्वतन्त्र विनिमय दर भी कहा जाता है क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इसका निर्धारण पूर्ति और माँग की शक्तियों द्वारा स्वतन्त्र रूप से होता है। अत: विनिमय दर के निर्धारण का सिद्धान्त माँग और पूर्ति का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी देश की करेंसी की विनिमय दर उस करेंसी की माँग तथा पूर्ति के द्वारा होती है। यदि

विदेशी विनिमय के लिए माँग बढ़ती है तब इसका मूल्य भी बढ़ेगा और यदि विदेशी विनिमय के लिए माँग घटती है तब इसका मूल्य भी घटेगा। इसी प्रकार विदेशी विनिमय की पूर्ति भी विनिमय दर को प्रभावित करती है। जितनी पूर्ति अधिक होगी विनिमय दर उतनी ही कम होगी।

प्रश्न 220. स्थिर विदेशी विनिमय दर के दो गुण और दो अवगुण बताइए।

उत्तर- स्थिर विदेशी विनिमय दर के दो गुण निम्नलिखित हैं--

1. बाजार स्थिरता---- स्थिर विनिमय दर के द्वारा विदेशी विनिमय बाजार की स्थिरता निश्चित हुई, जो विनिमय दर में बदलावों से सम्बन्धित जोखिम समाप्त होने के कारण हुई।

2. मुद्रा-स्फीति पर रोक--- यह मुद्रा-स्फीति को नियन्त्रित करने के लिए सरकार को बाध्य करती है क्योकि मुद्रा-स्फीति के समय स्थिर विनिमय दर भुगतान शेष में घाटा होने का कारण बनती है जो विदेशी विनिमय भण्डार में कमी करती है।

स्थिर विदेशी विनिमय दर के दो अवगुण निम्नलिखित हैं---

1. स्वर्ण का विशाल भण्डार---- स्थिर विनिमय दर प्रणाली में विशाल स्वर्ण भार आवश्यकता होती है क्योंकि विभिन्न करेंसियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में स्वर्ण में परिवार होती हैं।

2. सीमित पंजी प्रवाह--- क्योकि स्थिर विनिमय दर को बनाए रखने के लिए बहत अधिक अन्तर्राष्ट्रीय निधि की सहायता की आवश्यकता होती है, इस कारण पूँजी का विभिन्न देशों में आना-जाना बहुत सामित हा जाता ह। फलस्वरूप अन्तराष्ट्रीय संवृद्धि की प्रकिया लगता है।

प्रश्न 221. मान लीजिए C=40 + 0.8 YD, T =50, I =60,G = 40, X =90,M = 50 + 0.05Y (a) सन्तुलन आय ज्ञात कीजिए, (b) सन्तुलन आय पर निवल निर्यात सन्तुलन ज्ञात कीजिए.(c) सन्तुलन आय और निवल निर्यात सन्तुलन क्या होता है, जब सरकार के क्रय में 40 से 50 की वृद्धि होती है।

उतर-- (a) सन्तुलन आय (Y) =40+ 0.8 (50) + 60 +40+ 90-(50+ 0.5Y)

Y =40+ 40 + 60 + 40 + 90 - (50 -0.5Y)

Y= 270-50-0.5Y

⇒ Y= 220-0.5Y

Y + 0.5Y = 220

⇒ 1.5Y = 220

$Y = \frac{220}{15} \times 10$

$=\frac{2200}{15} = 146.67$

(b) सन्तुलन आय पर निवल निर्यात

सन्तुलन = X - M

यहाँ, x = 90, M = 50 + 0.5Y, Y =146.67

M = 50 + 0.5 (146.67)

M= 50 + 73.34 = 123.34

अतः निवल निर्यात सन्तुलन = 90 -123.34 = 33.34

(c) सन्तुलन आय (Y) = 40 + 0.8 (50) + 60 + 50 + 90 - 50 -0.5Y

Y=40+ 40+ 60 + 50+ 90-50-0.5Y

Y = 280-50-0.5Y ..

⇒ Y= 230-0.5Y

1.5Y = 230

⇒ $Y = \frac{230}{1.5} = 153.33$

निर्यात सन्तुलन = x - M

यहाँ, M = 50 + 0.5 (153.33)

M = 50 + 76.67 = 126.67

X - M = 90 + 126.67 = -36.67

प्रश्न 222. विनिमय दर की ब्रेटन वुड्स प्रणाली की व्याख्या कीजिए।

उत्तर---- ब्रेटन वुड्स प्रणाली का नाम संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक वित्तीय सभा जो ब्रेटन वुड्स (यू०एस०ए०) में.1944 में हुई थी, के पश्चात् रखा गया है जिसके कारण अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना हुई। यद्यपि ब्रेटन वुड्स प्रणाली विनिमय दर की स्थिर प्रणाली थीं तथापि इससे कुछ सीमा तक

समायोजन की अनुमति थी। इसी कारण इसे 'विनिमय दर को समजनीय सीमा प्रणाली' कहा जाने लगा। इस प्रणाली के अनुसार,

1. विभिन्न करेसियों को एक करेंसी अर्थात् अमेरिकी डॉलर के साथ संबंधित कर दिया गया ।

2 अमेरिका डॉलर का एक निश्चित कीमत पर स्वर्ण मूल्य निर्धारित कर दिया गया ।

3. एक करेंसी का अमेरिकी डॉलर के रूप में मूल्य का निहित अर्थ उस करेंसी का स्वर्ण के रूप में मूल्य माना गया।

4. दो करेंसियों के बीच समता के लिए स्वर्ण ही अन्तिम इकाई का कार्य करता रहा।

5. किसी करेंसी के समता मूल्य में समायोजन केवल अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की अनुमति से सम्भव था।

प्रश्न 223. व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अन्तर है? (NCERT; 2020)

उत्तर--- व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर

क्र.सं.	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1	व्यष्टि अर्थशास्त्र निम्न अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक सम्बन्धों अथवा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।	समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक सम्बन्धों अथवा आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करता है।
2	व्यष्टि अर्थशास्त्र मुख्यतः एक व्यक्तिगत फर्म अथवा उद्योग में उत्पादन तथा कीमत के निर्धारण से सम्बन्धित है।	समष्टि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मुख्यतः सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण से है।
3	इसके मुख्य उपकरण माँग और पूर्ति हैं।	इसके मुख्य उपकरण समग्र माँग और समग्र पूर्ति हैं।
4	व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की यह मान्यता है कि यह समष्टि पर स्थिर रहता है।	समष्टि अर्थशास्त्र की मान्यता है कि यह व्यष्टि पर स्थिर रहता है।

प्रश्न 224. समष्टि अर्थशास्त्र की दो सामान्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र की दो सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं---

1. समष्टि अर्थशास्त्र की नीतियों का पालन राज्य, वैधानिक निकाय; जैसे-भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड जैसी संस्थाएँ करती हैं। भारतीय संविधान में यह वर्णित है कि ऐसे प्रत्येक वैधानिक निकाय को सार्वजनिक लक्ष्यों का अनुपालन करना होगा। ये लक्ष्य व्यक्तिगत कल्याण (जैसे कि व्यष्टि अर्थशास्त्र में होता है) से सम्बन्धित नहीं होते।

2. समष्टि अर्थशास्त्र में निर्णयकर्ताओं को आर्थिक संसाधनों का परिनियोजन करने का निर्णय लेना पड़ता है। इस प्रकार के क्रियाकलाप का लक्ष्य व्यक्ति के हित के लिए नहीं होता। इस अनुपालन का सम्पूर्ण देश और उसके नागरिक के कल्याण हेतु किया जाता है।

प्रश्न 225. 1929 की महामंदी का वर्णन कीजिए। (NCERT)

उत्तर- इतिहास में महामंदी, भीषण मन्दी, द ग्रेट डिप्रेशन (1929-1939) के नाम से जानी जाने वाली यह घटना एक विश्वव्यापी आर्थिक मंदी थी। इस घटना ने पूरी दुनिया में ऐसा कहर मचाया कि उससे उबरने में कई साल लग गए। विश्व के आधुनिक इतिहास में यह सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण मंदी थी। इसकी ... शुरुआत 29 अक्टूबर, 1929 को अमेरिका में शेयर बाजार (वॉल स्ट्रीट) के धराशायी होने के कारण हुई। अधिकतर लोगों द्वारा अपने खर्चों को सीमित कर देने के कारण माँग प्रभावित हुई और बहुत-से उद्योग घाटे में आने लगे इसके कारण श्रमिकों को रोजगार से निकाला जाने लगा। अमेरिका में 1929 से 1933 तक कामगारा का दर 3% से बढ़कर 25% हो गई। इस अवधि के दौरान अमेरिका में समस्त निर्गत में लगभग 33% का गिरावट दर्ज की गई। जल्द ही महामंदी ब्रिटेन, जर्मनी और भारत सहित विश्व के अन्य भागों में भी कल गई। इस समयावधि में अधिकांश लोग बेरोजगार और भुखमरी के शिकार थे। लोग बड़ी संख्या में दुकानों के बाहर भोजन के लिए लम्बी-लम्बी कतारों में लगे रहते थे।

इन घटनाओं ने अर्थशास्त्रियों की पूर्व की अवधारणा को अंसत्य सिद्ध कर दिया तथा उन्हें नए प्रकार से सोचने के लिए प्रेरित किया। सन् 1936 में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स की प्रसिद्ध पुस्तक 'द जनरल थ्योरी ऑफ इम्प्लॉयमेंट, इन्टरेस्ट एण्ड मनी' प्रकाशित हुई जिससे समष्टि अर्थशास्त्र की एक नई शाखा समष्टि अर्थशास्त्र का उद्भव हुआ, जिसका दृष्टिकोण अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली तथा विभिन्न क्षेत्रों की परस्पर निर्भरता का परीक्षण करना था।

प्रश्न 226. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ क्या हैं? (NCERT)

उत्तर- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं----

1. भूमि तथा पूँजी का निजी स्वामित्व।

2. लाभ अर्जन ही एकमात्र उद्देश्य होता है।

3. मॉग एवं पूर्ति की बाजार की स्वतन्त्र दशाएँ।

4. सरकार अर्थव्यवस्था में सामाजिक न्याय, विकास तथा स्थिरता का ध्यान रखती है।

प्रश्न.227. समष्टि अर्थशास्त्र की दृष्टि से अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख क्षेत्रकों का वर्णन करें। (NCERT)

उत्तर- समष्टि अर्थशास्त्र की दृष्टि से अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख क्षेत्रक निम्नलिखित हैं---

1. गृहस्थ--- परिवार अथवा व्यक्ति, जो फर्मों को उत्पादन के साधन उपलब्ध कराते हैं तथा फर्मों से वस्तुएँ एवं सेवाएँ खरीदते हैं।'

2. फर्मे--- आर्थिक इकाइयाँ, जो उत्पादन के साधनों द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करती हैं।

3. सरकार--- राज्य, जो देश में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखता है। कर तथा जुर्माना लगाता है, कानून बनाता है तथा देश के निवासियों के कल्याण के लिए कार्य करता है।

4. बाह्य क्षेत्र-इसका तात्पर्य देश के शेष विश्व के साथ आर्थिक लेन-देन से है।